

कांजी में डूबा रसगुल्ला

(हास्य-व्यंग्य काव्य-संग्रह)

गौरीशंकर 'मधुकर'





सुकीर्ति प्रकाशन



I.S B N 81-88796-140-9

पुस्तक : कांजी में डूबा रसगुल्ला (हास्य-व्यंग्य काव्य-संग्रह)
कवि : गौरीशंकर 'मधुकर'
सर्वाधिकार : लेखकाधीन
प्रकाशक : सुकीर्ति प्रकाशन
डी. सी. निवास के सामने, करनाल रोड
कैथल-136027 (हरियाणा)
फोन 01746-235862, 09215897365
आवरण व सज्जा : पंकज गोस्वामी, बीकानेर
मुद्रक : सुकीर्ति प्रिंटर्ज, करनाल रोड, कैथल
संस्करण : 2008
मूल्य : भारत मे रुपये 50 00
विदेश में 5 $ (पांच यू. एस. डालर)

Kanji Mean Duba Rasgulla (Collection of Poems)
by Gourishankar 'Madukar' Rs 50 00

ॐ गुरवे नमः

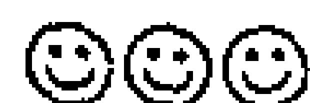
समर्पित





शब्द सार्थक

शब्द सार्थक रहें
आपकी सदा लेखनी प्रखर रहे,
हिमगिरि से
निकली गंगा-सी
अभिव्यक्ति निर्बाध बहे
मैं प्रकाश के इस उत्सव पर
नमन आपको करता हूं
स्वस्थ रहें, यश बढ़े निरंतर
यही कामना करता हूं।



कहां क्या है?

बाअदब बामुलाहिजा......होशियार

भवानीशंकर व्यास 'विनोद'

श्री गौरीशंकर 'मधुकर' व्यंग्य और हास्य के सिद्धहस्त कवि हैं। इस रूप में उनकी पूरे देश में पहचान और प्रतिष्ठा है। पूर्व में कोलकाता हो या दक्षिण में बंगलौर व हैदराबाद, पश्चिम में सूरत और अहमदाबाद हो या उत्तर भारत में विविध स्थान; कवि सम्मेलनों के श्रोता उनकी रचनाओं को सुनते-सुनते कभी अघाते नहीं हैं। 'वन्स मोर', 'वन्स मोर' की ध्वनियों और तालियों की गड़गड़ाहट बताती है कि वे श्रोताओं के मन की बातें ही सामने लाते हैं। उनकी व्यंग्य कविताओं की तुलना 'कांजी में डूबे हुए और पोर-पोर रसे हुए रसगुल्लों' से की जा सकती है। मिठास तो है, पर है थोड़ी चरपराहट और चटपटाहट के साथ। अंग्रेजी में कहावत है, 'द प्रूफ ऑफ पुडिंग इज इन इट्स ईटिंग', यानी ऐसे मिश्रण का स्वाद तो वही जान सकता है जिसने इसे चखा हो। बस, एक बार चख लीजिए, फिर तो चखते रहने की ही क्यों, खाते रहने की आदत ही पड़ जायगी।

सार्थक व्यंग्य-लेखन वही कर सकता है जिसमें जीवट हो और जोखिम उठाने का दमखम हो। वैसे मधुकर की कविताओं में सब प्रकार के मसाले हैं, पर हाँ, मिर्ची उसी को लगती है जिसने कुछ 'ऐसा-वैसा' किया हो यानी गड़बड़ की हो। इस मिर्ची का तेवर और उसकी तासीर भी अलग-अलग है। किसी को जरा-सी तीखी तो किसी को ततैया जैसी। जिस-किसी ने एक बार इस 'कुंडालिये' में पग रख दिया तो समझो कि उसकी तो फिर खैर नहीं। व्यंग्य रचनाकार को साफगोई के साथ लिखना पड़ता है और अपराधी तत्त्वों को यह साफगोई सुहाती नहीं। ऐसे में वे जो भी कुचक्र रचते हैं, उसकी जोखिम उठाने के लिए भी रचनाकार को साहस (जीवट) के साथ तैयार रहना होता है।

इन कविताओं की दो विशेषताएँ हैं—पहली तो यह कि कवि अपने समय और परिवेश से सीधा संवाद करते घबराता नहीं, पर ऐसा करते हुए भी वह कलात्मकता पर पूरा ध्यान देता है। मधुकर की कविताएँ सामयिकता और कलात्मकता की जुगलबन्दी के समान हैं। कविताएँ सीधा-सादा विवरण नहीं देतीं, पर, साथ ही काव्य-कला की कसौटी पर भी चौबीस कैरट सोने की तरह पूर्णतया खरी उतरती हैं। दूसरी विशेषता यह है कि तीखी से तीखी बात को कवि इस सलीके से कहता है कि जिस किसी के भी चोट लगती हो, वह भीतर चाहे कितना ही तिलमिलाये, पर बाहर तो 'लोकदिखावे' के कारण ही सही, दूसरों के साथ उसे भी हँसना पड़ता है। भीतर आह और बाहर वाह! वाह रे मधुकर! तेरा भी जवाब नहीं। आह को वाह तक पहुँचाने का हुनर जो तुममें है, वह कम ही कवियों के बूते की बात है।

जीवन में अनेक विसंगतियाँ और विडम्बनाएँ होती हैं। यदि उन पर कायदे से कुछ लिखा जाए तो वह व्यंग्य ही होगा; व्यंग्य के सिवाय कुछ भी नहीं होगा। तभी तो माना जाता है कि व्यंग्य जीवन से निकटता से जुड़ी हुई विधा का नाम है। जीवन ही उसका उत्स है और जीवन ही उसकी संजीवनी; जीवन ही उसका आधार है और जीवन ही उसकी आत्मा। यही कारण है कि अन्य विधाओं की तुलना में व्यंग्य की अपील ज्यादा होती है। ऐसे में यदि अन्य विधाओं के कवि व्यंग्य रचनाकारों से ईर्ष्या करें तो इसमें आश्चर्य करने जैसी कोई बात नहीं। वे चाहे व्यंग्य-लेखन की हँसी उड़ाएँ या उसे दोयम दर्जे का रचनाकर्म मानें, पर पाठकों/श्रोताओं को तो यही लगेगा कि खिसियानी बिल्ली खंभे को नोच रही है। आज व्यंग्य ही प्रतिबद्धता का प्रमाण है; व्यंग्य ही विसंगतियों के खिलाफ प्रतिपक्ष की भूमिका निभाता है और व्यंग्य ही तत्काल असर करने वाली औषधि का काम करता है। अच्छे व्यंग्य में न तो भौंडापन होता है, न वैर निकालने के लिए किसी पर छींटाकशी का भाव; न आत्मतुष्टि का झूठा अहं होता है और न 'सब-कुछ ठीक कर देने' का दावा करने की चेष्टा। इसमें न तो आदेशों की छौंक होती है और न सन्देशों का हींग-बघार। इसे हम 'तत्काल' से जुड़ी 'महाकाल' की यात्रा मान सकते हैं।

मधुकर की व्यंग्य-रचनाओं की तीन श्रेणियाँ हैं—पहली वह, जिसमें हास्य तनिक भी नहीं होता, पर सामाजिक सरोकारों से जुड़ी और सोच को संस्कारित करने वाली कविताएँ होती हैं। दूसरी श्रेणी उन रचनाओं की है जिनमें प्रतीकों व बिम्बों के साथ एक स्वस्थ और स्वतःस्फूर्त व्यंग्यधारा होती है। बात को सीधे न कहकर घुमावदार तरीके से इस तरह कहना कि 'धनुष'

भी टूट जाए, पर प्रहार का पता तक न चले। तीसरी श्रेणी की कविताएँ हास्य मिश्रित व्यंग्य की हैं। इनमें खिलखिलाहट भले ही हो, पर तिलमिलाहट भी कम नहीं होती। ये तीनों धाराएँ एकसाथ भी चल सकती हैं और पृथक्-पृथक् भी।

सामाजिक सरोकारों से जुड़ी शुद्ध व्यंग्य रचनाओं में : अदालत से डरो मत, सौ रुपये का नोट, ब्याह-शादी, चोर-चोर मौसेरे भाई, कैदियों से इंटरव्यू, इच्छारूपी हाथी, आतंकवादी से इंटरव्यू, स्वदेशी तथा मजदूर नेता सम्मिलित हैं। प्रतीकों व बिम्बों के माध्यम से रची गई सशक्त कविताएँ हैं : परत-दर-परत और नये युग के नये अर्जुन। अनेक रचनाएँ हास्य मिश्रित व्यंग्य का प्रतिनिधित्व करती हैं, जैसे बीमा करवाले, साड़ियों की बम्पर सेल, बदला लेगी, जान धीरे-से निकलती है, शादी मत करना, नव-दम्पती, बाहर भी राज करूँगी, मेरी सहेली, जादू की मशीन और म्यूजियम।

हास्य कविताओं पर कई लोग नाक-भौं सिकोड़ा करते हैं। उनके अनुसार प्रायः हास्य-कविताओं में भोंडापन व बेतुकापन होता है; चुटकुलेबाजी और पत्नी-पुराण होते हैं; शारीरिक विकृतियों पर चटखारे लेने की प्रवृत्ति होती है; और तो और, स्त्रियों को लेकर भद्दे मजाक तक होते हैं। मैं इन सभी बातों से सहमत होते हुए भी कह सकता हूँ कि मधुकर का हास्य इन सभी बुराइयों से दूर है। वह सहज और स्वाभाविक है; रंजन करने व रिझाने वाला है; हास्य होते हुए भी कहीं-न-कहीं व्यंग्य से जुड़ा हुआ है; शिष्ट और सलीकेदार है तथा 'पारिवारिक' है। पारिवारिक इस लिहाज से क्योंकि दादा से लेकर पोते या पोती तक तथा सास से लेकर बहू तक, सभी एकसाथ बैठकर इन कविताओं का रसास्वादन कर सकते हैं। इनमें न तो द्विअर्थी बातें होती हैं और न 'अश्लील' समझे जाने वाले भाव। हास्य भी है तो समाज से जुड़ा हुआ है।

मधुकर की हास्य एवं व्यंग्य से इतर कविताएँ भी कम असरदार नहीं हैं। जीवन न तो नीरस है और न ही एक पगडंडी पर चलने वाला। इसमें यदि रूमानियत या सौन्दर्यबोध तनिक भी न हो तो फिर ऐसा जीवन किस काम का? कवि की शृंगारपरक व सौंदर्यजन्य कविताएँ तो ऐसी हैं कि कई अधेड़ या वृद्ध व्यक्तियों को अपनी भूतपूर्व जवानियाँ याद हो आती हैं। सौन्दर्यबोध में तो लगता है मानो वे किसी बिहारी या किसी पद्माकर के नये व ताजे संस्करण हों।

'कुँवारे थे' कविता कुँवारों में जहाँ 'हूँस' जगाती है, वहीं शादीशुदा

लोगों को गमगीन बना देती है। वह अल्हड़ जीवन, कुमारियों से मधुर मिलन, आहें भरने की उनकी अदाएँ, नाज-नखरों का प्रदर्शन, गालों पर लिपस्टिक की मोहरें, मस्ती के दिन और मस्ती की रातें.....और भी न जाने क्या-क्या! उफ, शादी होने के बाद ऐसा क्यों लगने लगता है जैसे वसन्त के बाद पतझड़ शुरू हुआ हो! प्रकृति में तो पतझड़ पहले आता है और वसन्त बाद में, पर वास्तविक जीवन में यह उलटबाँसी भला कैसे अच्छी लग सकती है! सुन्दरियों के नाटक और उनकी नौटंकियाँ मानो स्वप्न बन कर रह गई हों।

सच्चे प्यार का एहसास मिलन से ज्यादा जुदाई में हुआ करता है। तब सपने और स्मृतियाँ मानसपटल पर जो बिम्ब बनाते हैं उनमें ही तो प्यार की निर्झरिणी बहा करती है। पक्षियों की चहचहाहट हो या वर्षा से भीगी धरती की मादकता, अठखेलियाँ करती हुई बहकी-बहकी हवा हो या सपनों में उभरती हुई छवियाँ, ये सारे बिम्ब किसी रूपसी की याद दिलाने को काफी हैं। वह रूपसी पत्नी भी हो सकती है या फिर कोई प्रेयसी, इससे कोई विशेष फर्क नहीं पड़ता, पर मधुकर तो 'गृहस्थी' कवि हैं, अत. ये सारी सुधियाँ पत्नी को लेकर ही हैं। इन सुधियों में ही तो मधुर मिलन की धारावाहिक कड़ियाँ छिपी हुई हैं।

मधुकर की कविताओं में नारी की गरिमा इस कदर होती है कि कविता की 'गौरी' तो महिमामंडित होती चली जाती है और बेचारा 'शंकर' पिछलग्गू या परिशिष्ट बनकर रह जाता है। उसकी हालत ठीक वैसी ही होती है जैसे ट्रेक्टर के पीछे किसी ट्रोली की हुआ करती है। भूमिका में मैं प्रायः उद्धरण नहीं दिया करता, पर महिमामंडित पत्नी व बेचारे पति की स्थितियाँ दर्शाने वाली ये पंक्तियाँ फिर भी मुझे विवश करती हैं कि मैं 'मधुकर' के सत्य को उद्घाटित कर ही दूँ।

मैं ट्रॉली हूँ तो वह ट्रेक्टर है / मैं पैरा हूँ तो वह चैप्टर है / मैं सैनिक हूँ तो वह बंकर है / मैं पैट्रोल का खाली पम्प हूँ / तो वह भरा हुआ टैंकर है / वह शिला है तो मैं कंकर हूँ / वह गौरी है तो मैं बेचारा शंकर हूँ।

संक्षेप में कहा जाए तो श्री गौरीशंकर 'मधुकर' की रचनाएँ 'अबोट' व्यंग्य और निश्छल हास्य की हैं। विशिष्ट जीवनदृष्टि वाले सामाजिक सरोकारों की हैं। दुर्भावना व खिल्ली उड़ाने के भावों से सर्वथा वंचित होते हुए भी विसंगतियों पर जमकर प्रहार करने वाली हैं। कवि ऑपरेशन के लिए तो चाकू का प्रयोग भले ही करे, पर हत्या के लिए खंजर कभी नहीं उठाता। उसकी दृष्टि बारीक, सलीकेदार व बिना लागलपेट वाली है तथा भाषा चुस्त

व भावपरक है। कवि का उद्देश्य दुष्कर्मियों के तंत्रजाल (नैटवर्क) को उघाड़ना व फिर उस पर जमकर प्रहार करने का रहता है। उसके व्यंग्य की लय जीवन की लय से जुड़ी रहती है।

ऐसी कविताएँ उन छिछली रचनाओं को प्रचलन से उसी प्रकार दूर कर सकती हैं जैसे नये व प्रामाणिक सिक्के खोटे सिक्कों को बाजार से हटा देते हैं। कवि के आदर्श हैं—केदारनाथसिंह, कुँवरनारायण, विनोदकुमार शुक्ल तथा मंगलेश डबराल जैसे कवि। हरिशंकर परसाई व शरद जोशी एवं बालकवि बैरागी तो खैर सभी व्यंग्य रचयिताओं के आदर्श हैं।

ये रचनाएँ आज के बाजारवाद के प्रतिपक्ष में मानव की मुक्त आत्मा का प्रतिनिधित्व करती हैं, अतः मैं इनका स्वागत करता हूँ और अपेक्षा करता हूँ कि कवि का तीसरा संकलन इससे भी अधिक पुरजोर व असरदार होगा।

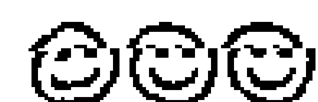
इतना सब-कुछ कहने के बाद भी मैं पाठकों/श्रोताओं को आगाह करना चाहूँगा कि व्यंग्य रचनाकारों को चाहे जितना सम्मान दें, पर भाई! उनसे सावधान (होशियार) भी रहें, क्योंकि जहाँ भी आप चूके, उसी क्षण उनकी जद में आने में देर नहीं लगेगी। इसीलिए तो मैंने इस भूमिका का शीर्षक रखा है : 'बाअदब, बामुलाहिजा....होशियार'। इत्यलम्।

-भवानीशंकर व्यास 'विनोद'
पूर्व वरिष्ठ सम्पादक, शिविरा
बीकानेर

निवास :
1 स 9, पवनपुरी,
बीकानेर

श्रीगणेश

हम किसी कार्य को
प्रारम्भ करते हैं तो
सर्वप्रथम विघ्न-विनाशक
श्रीगणेशजी को मनाते हैं
वे निर्विघ्न कार्य सम्पन्न कराते हैं,
विज्ञान वाले
इन बातों को नहीं मानते
गणेशजी के वाहन को
नहीं पहचानते,
लेकिन गणेशजी ने पूरे विश्व में
अपना लोहा मनवाया है
विज्ञान भी इनकी
शरण में आया है
कम्प्यूटर में जब
माउस चलता है तो
समस्या का
समाधान निकलता है
गणेशजी के माउस ने
विश्वभ्रमण किया है
विमान की गति को भी
पीछे छोड़ दिया है
संसार में तहलका
मच गया था कि
गणेशजी ने दूध पीया है।



सौ का नोट

सरकारी दफ्तर के
कर्मचारी से हमने पूछा
क्या साहब अन्दर हैं ?
वो बोला - नहीं घर हैं
हमने पूछा
कब तक आएंगे ?
हंसकर वो बोला
जब आप
सौ का नोट दिखाएंगे
हमने पूछा सौ रुपये
किस खुशी में ?
वो बोला आपकी
भलाई है इसी में
सौ रुपये एडवांस पेमेंट है
जिसमें साहब का कमीशन
एट्टी परसेंट है
और ऐसा है भइये!
ये रुपये नहीं हैं
ये तो हैं गाड़ी के पहिये!
इन पर बैठकर ही
साहब कहीं आते हैं - जाते हैं
आप इसे रिश्वत बताते हैं
अरे! इतनी महंगाई में
तनख्वाह से तो
घरखर्च ही नहीं चल पाता है
रिश्वत तो एक पुल है जो
इधर वाले को उधर वाले से
मिलाता है, नहीं दोगे तो
खड़े-खड़े ऊबोगे ही' और
तैरना नहीं जानते हो तो

पूछोगे ही
अब यह सोचलो कि
आपको क्या करना है ?
यह आप पर निर्भर है
जो रुपये हैं तो
साहब यहां पर हैं
नहीं तो घर पर हैं।

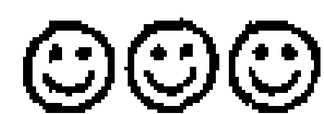


लादेन क्या चीज है

उसने पूछा,
भाई साहब!
ये लादेन क्या चीज है?
मैं बोला अमरीका का
बोया हुआ रक्तबीज है
रुस के विरुद्ध में
अफगानिस्तान के युद्ध में
इसे हथियारों की
खाद से पाला-पोसा



सांप पर कर लिया भरोसा
अमरीका की इस बेवकूफी पर
पूरा जग हंस गया
उसका पाला
भुजंग विकराला
लादेन रूपी सांप
खुद उसे डस गया
इस अपनी हार पर
अमरीका को हताशा है
झुंझलाहट है, खीज है
अब तो समझ गए ना!
ये लादेन क्या चीज है?



षष्टीपूर्ति उत्सव

षष्टीपूर्ति के उत्सव पर
नेताजी के घर पर
आये लेकर उपहार
आफसर, व्यापारी और ठेकेदार
दूसरे दिन जब भेंट में प्राप्त
पैकेट खुले तो एक पैकेट में
खादी के तीन कुर्ते मिले
एक छोटा, एक मध्यम और
एक उनके आकार का
चक्कर समझ में नहीं आया कुछ
इस उपकार का
किंतु साथ में एक कागज रखा था
और उस पर लिखा था
राजनीति के अलावा

आपको और किसी से
सरोकार नहीं है
कोई पुश्तैनी धंधा
कोई व्यापार नहीं है
तो आपकी आने वाली पीढ़ी
कहां धक्के खाएगी
राजनीति के सिवा और कहां जाएगी?
जब आप इस धरती को धन्य कर
स्वर्ग सिधारेंगे तो
शेष कुर्ते हैं ना!
वे आपके बच्चे धारेंगे।
यह वाक्य पढ़कर नेताजी
बिल्कुल काठ के हो गए
मन ही मन बुदबुदाये
यार! आधे साठ के हो गये।

☺☺☺



प्रदूषण

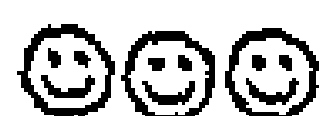
बड़े साहब से
बड़ा जरूरी काम था
ठंड के दिन थे
और हमें जुकाम था
उनसे बात करते हुए
अकस्मात् हमें छींक आई
वे बोले – प्रदूषण
बहुत बढ़ गया है भाई!
यह कहकर
उन्होंने सिगरेट सुलगाई
और ढेर-सारा धुआं उगल दिया
दोस्तो! वहां धुआं
प्रश्नचिह्न की भांति खड़ा हो रहा था
उसका आकार पहले से
और बड़ा हो रहा था।

☺☺☺



नवदम्पती

नवदम्पती
कार में घूमने जा रहे थे
नोक-झोंक में
एक-दूसरे को नीचा दिखा रहे थे
मजाक-मजाक में बात बिगड़ गई
इस हद तक बढ़ गई कि
भूल गए मर्यादा दाम्पत्य के धर्म की और
एक-दूसरे को देने लगे
तलाक की धमकी
फिर दोनों ने मौनव्रत
धारण कर लिया
मन में पछता रहे थे
ऐसा हमने क्यों किया ?
मैदान में एक गधे को चरता देख
पति बोला - यह तुम्हारा रिश्तेदार है
यहां भी तैयार है
पत्नी भी कब चूकने वाली थी ?
उसने लम्बा-सा घूंघट निकाल लिया
और बोली - हां, रिश्तेदार तो है
लेकिन शादी के बाद हुआ है
शक्ल-सूरत तो मिलती है
अक्ल में भी तुम्हारे जैसा है
वैसी ही इसकी पैठ है
क्यों न हो आखिर ?
तुम्हारा बड़ा भाई
और मेरा जेठ है
इस मजाक ने
दोनों के द्वन्द्व को भुला दिया
फिर से दूध और
मिश्री की तरह एक बना दिया।



चोर-चोर मौसेरे भाई

नर्सिंग होम के पिछवाड़े
मिला एक लावारिस मुर्दा
वो गरीब भिखारी था बेचारा
जिसका निकाल लिया था गुर्दा
अखबार में जब यह समाचार आया तो
सरकार ने मेडिकल जांच बोर्ड बिठाया
मित्रो! झूठ ने सच्चाई को
पूरा पचा लिया था
बोर्ड के डाक्टरों ने
हत्यारे डाक्टरों को बचा लिया था
इस जांच से
यह बात समझ में आई है
कुछ भी कहो यार!
चोर-चोर सभी मौसेरे भाई हैं।

☺☺☺



मिलावट

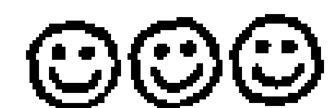
मिलावट! जी हां साहब!
हुई है बिल्कुल, किंतु
बन तो गया यहां एक नया पुल
पूरा दस किलोमीटर लंबा
कभी टूटकर गिरेगा
इसका कोई खम्भा
इस बात से न तो ठेकेदार डरता है
न इंजीनियर घबराता है
चूंकि यहां तो साल-दो साल में
अकसर भूकंप आता है
ठेकेदार ने सीमेंट में राख मिलाई है
इंजीनियर ने रिश्वत खाई है
कोई क्या कर लेगा इनका?
जब चोर-चोर सभी मौसेरे भाई हैं।

☺☺☺



घोटाला

पिछले साल
करोड़ों का हुआ घोटाला
घोटाले में फंस गया
मंत्रीजी का साला
विपक्ष ने भी
इस मामले को खूब उछाला
तब मंत्रीजी ने
सरल-सुगम रास्ता निकाला
विपक्षी दल के नेता के पुत्र से
करवा दी साली की सगाई
इसलिए सच्चाई आज तक
सामने नहीं आई
कोई क्या कर लेगा
इनका जब
हैं. चोर-चोर सभी मौसेरे भाई।



मेरी सहेली

ड्राइंगरूम की खिड़की पर
सुनाई पड़ा इक महिला-स्वर
'मधुकरजी! लो
आपकी सहेली आ गई,
यह सुनकर
हमारी इकलौती धर्मपत्नी
भन्ना गई, कुछ घबरा गई
कुछ चकरा गई
लगी सोचने यह
मेरी कौन सी सौतन आ गई?
अजीब-सी पहेली है
कौन इनकी सहेली है?
कॉलेज वाली कि दफ्तर वाली
इधर वाली कि उधर वाली?
हमारी श्रीमतीजी
आसमान सिर पे उठाने ही वाली थी
अपना असली
रौद्ररुप दिखाने वाली थी
इसके पूर्व ही
हमने आत्मसमर्पण करते हुए कहा -
मुझे क्या पता था
कि श्रीमतीजी की रुचि की
किताब लेकर
मैंने अपनी आफत ले ली है
प्रिये! ये महिलाओं के लिए
छपने वाली पत्रिका है
मेरी नहीं, यह तुम्हारी सहेली है।
☺☺☺

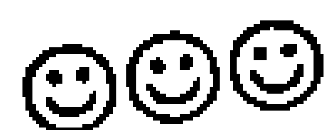
सूखा / अकाल

लो फिर सूखा पड़ा है
भयंकर अकाल है
आदमी तो आदमी
जानवर तक बेहाल है
भूखे-प्यासे लोगों से
मिट्टी खुदवाते हैं
रुपये की जगह
उन्हें अठन्नी थमाते हैं
गरीबों का खून
चूसने वालों के घर
नोटों की गड्डियां रहती हैं
बेबस, बेचारे मजदूर के
बदन पर
सिर्फ हड्डियां रहती हैं
ऊपर से नीचे तक
फैली है दलालरूपी बीमारी
भ्रष्ट राजनेता, बेईमान अधिकारी
सहायता व राहत सामग्री
बीच में ही मार लेते हैं
बहुत बड़े हैं पेट इनके
सब-कुछ डकार लेते हैं
आम आदमी के हिस्से में तो
बस! कुछ बूंदें ही आती हैं
राहत की सरिता बीच में ही
सूख जाती है
यदि कोई हृदय से चाहता है कि
मजदूरों का इतना
बुरा हाल न हो तो
यह तभी
संभव होगा
जब बीच में कोई दलाल न होगा।



मंत्री का फोन

मंत्रीजी ने
थानेदार को फोन किया
एक करोड़ की
चोरी वाले अभियुक्त को
तुमने पकड़ लिया?
जी हां साहब!
उसे जमानत पे रिहा कर दो
वरना
अपना इस्तीफा मेज पर धर दो
वह बोला - साहब!
मैंने तो
राष्ट्रहित का काम किया है
बहुत बड़े चोर को पकड़ा है
मंत्रीजी बोले -
उसका खूंटा
बहुत तगड़ा है
दोनों के
बिस्तर गोल हो जाएंगे
बेमौत मारे जाएंगे
यह ढर्रा जैसे चल रहा है
वैसे ही चलने दो
ज्यादा ईमानदार मत बनो
हम तो
नाटक के पात्र हैं
खलनायक को हीरो की भूमिका
अदा नहीं करनी चाहिए।

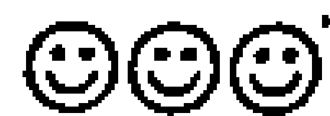


कविता का पुरस्कार

बस–स्टैण्ड पर खड़े–खड़े
बस का
कर रहे थे इंतजार
तब ही अचानक एक कार
हमारे करीब आई
कार वाला बोला –
आ जाओ 'मधुकर' भाई!
उसे देख सोचा कि
यह सच है या कोई सपना?
अरे! यह तो
वही पुराना
कवि मित्र है अपना
जिससे शहर का
हर कवि डरता था
पट्ठा इतनी बोर
कविता करता था
मैंने कहा – यार!
कार में तो बैठ लूंगा
मगर शर्त यह है
तुम्हारी कोई
कविता नहीं सुनूंगा
तू तो बस! यह बता
रह कैसे रहा है
इतने ठप्पे से, ठाठ से?
हंसकर वह बोला – 'मधुकरजी'
सिर्फ एक बार के काव्यपाठ से
हुआ यूं

मैं बीकानेर से जा रहा था बदायूं
साथ वाली सीट पर
एक मोटा-सा आदमी बैठा था
पता नहीं वो क्या था
तस्कर, सेठ या अफसर?
वो तो वो ही जाने
मैंने उसे परिचय दिया
और चाय पिलायी
पटा-पटूकर उसे
थोड़ी कविताएं सुनायी
सुनायी भी क्या?
जबरदस्ती पेल दी
उसके कानों में
दस कविताएं
एक साथ उंड़ेल दी
थोड़ी ही देर में
वह उल्टियां करने लगा
मेरी कविताओं से घबरा गया
उसका दम फूल गया
बस से कहीं उतरा
तो अपनी अटैची भूल गया
मैंने उसे खूब ढूंढा, तलाशा
मगर कहीं नहीं मिला
पता नहीं, किधर गया?
क्या पता
मेरी कविता की कृपा से
घर जाकर मर गया तो?
मित्रवर 'मधुकर'!
घर आकर अटैची खोली
देखा, सोने के बिस्किट
हीरे, जवाहरात, तब ही
मेरे मन में आई यह बात

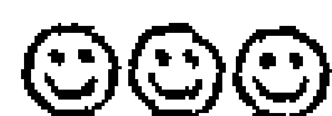
यह शायद उसने मुझे
मेरे काव्यपाठ का
पारिश्रमिक दिया है
या कोई पुरस्कार है
अब तो कविता की कृपा से
मेरे पास बंगला है
बैंक बैलेंस है, कार है
खुश मैं हूं
सुखी पूरा परिवार है
यह एक बार के
कवितापाठ का चमत्कार है।

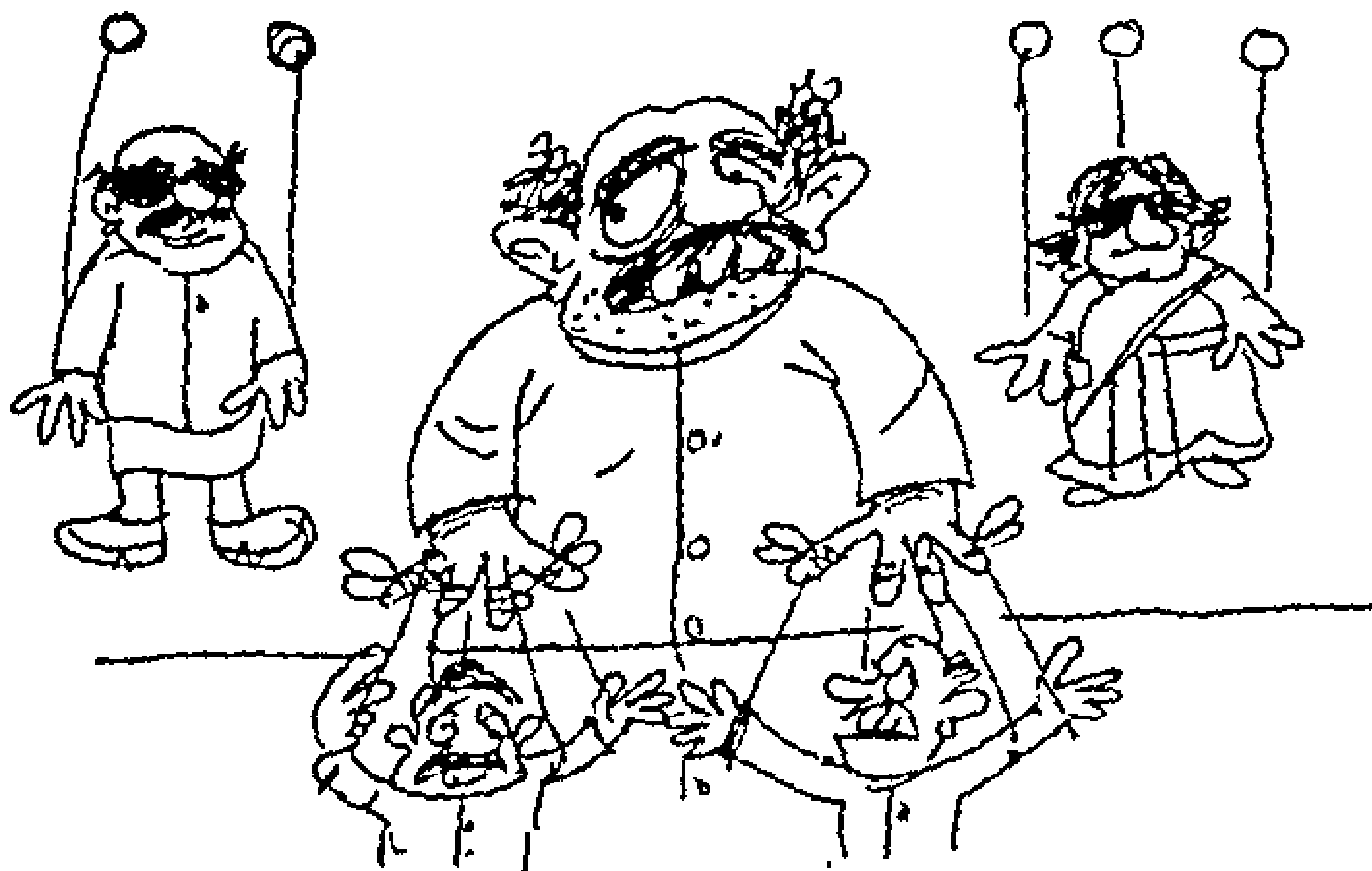


लड़की वाले आए

लड़की वाले
लड़का देखने आए
वे कुछ सकुचाए
कुछ शरमाए
फिर संभलकर
अपने उद्गार बताए –
हमारी लड़की
सुन्दर है, सुशील है
गृहकार्य में दक्ष है
जीवन में आगे बढ़ना
उसका लक्ष्य है

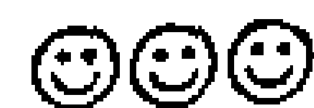
प्रगतिशील विचारों की है
इन्तजार बहारों की है
वैसे आपका लड़का क्या करता है?
हमारा लड़का बड़ा होनहार है
वह कवि है, कलाकार है
तब तो
दोनों की अच्छी निभेगी
हमारी लड़की भी
कविता लिखेगी
उसकी संवेदना
बहुत गहरी है
चूंकि वह
जन्म से ही बहरी है।





मां के संस्कार

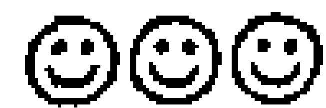
हिन्दी साहित्य की
कक्षा में एक लड़का
बड़ा होनहार था
कोई प्रश्न करे
उससे पूर्व
उसका उत्तर तैयार था
लेकिन उसमें एक कमी थी
वह बोलता ज्यादा था
अध्यापिका ने
रिपोर्ट कार्ड में लिखा
आपका लड़का वैसे तो
बड़ा होनहार है
वह जन्मजात कलाकार है
उसमें नेता, अभिनेता
बनने के अच्छे आसार हैं
लेकिन
इसमें एक बुराई है
यह बोलता ज्यादा है
वापस कार्ड लौटकर आया
तो उसमें लिखा हुआ पाया
आपकी बात का ठोस आधार है
ये इसकी मां के संस्कार हैं
इसकी मां एक एम.पी. है
और पिता एम.पी. के पति
अब भी इसके
अधिक बोलने पर
आपको है कोई आपत्ति ?



पड़ोसी से बदला

एक सज्जन
ब्रह्ममुहूर्त में हमारे घर आए
हमें देवीजी ने
नींद से जगाया
हम घबराए
सोचा – इस वक्त
कौन कम्बख्त आया होगा ?
उत्तर मिला –
जो भी होगा, जरूरतमंद होगा
हम आंखें मलते हुए
जैसे ही
कमरे से बाहर आए
वे सज्जन
सैक्रीनयुक्त हंसी से
मुस्कराये
हाथ जोड़कर बोले –
शर्माजी क्षमा करना
आपको बेवक्त नींद से जगाया
पर रात को मैं भी
सो नहीं पाया
तब मुझे यह खयाल आया कि
एक विराट् कवि सम्मेलन
कराना चाहिए
आप धाकड़ कवियों की
टीम बुलाइए, पर
शर्त यह है

कवि सम्मेलन रात-भर
चलना चाहिए
पारिश्रमिक की चिंता मत कीजिए
जितना मांगे उतना दीजिए
मैंने कहा – श्रीमान्‌जी!
यह तो बताइए
आपका यह शौक
कितना पुराना है?
वे बोले – छोड़िये भी
इन बातों को
यह तो एक बहाना है
हमें साहित्य से, कविता से
क्या लेना-देना है?
हमें तो अपने पड़ौसी से
बदला लेना है।



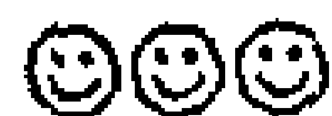
पूरा देश जल रहा है

पड़ोस का लड़का कल
मुझसे बोला – अंकल
आपने भगवान को देखा है?
मैंने उससे पूछा –
तुझे हुआ क्या है?
अरे! भगवान तो
सब जगह मौजूद है
भला हम उसे क्या देखेंगे?
वही हम सबको देखता है
वह सर्वत्र व्याप्त है
इस पर लड़का बोला –
आपका उत्तर अपर्याप्त है
किसी ने उन्हें देखा नहीं
कोई उनसे मिला नहीं
कोई उनके संग चला नहीं
आखिर भगवान कहां रहते हैं?
फिर आप कैसे कहते हैं कि
भगवान हैं? मैंने उसे कहा –
तू सर मत खपा
तुझे परेशानी क्या है?
तू तो बस यह बता।
उसने मुझे भारत का
नक्शा दिखाया और कहा –
देखो! देखो! यह गरम है
आपको पता चला?
मैंने उसे खूब
छू-छू कर देखा
और कहा –
अबे बेशर्म, ये कहां गरम है भला!
क्या सुबह से तुझे

कोई और नहीं मिला ?
इस पर वो हो गया नाराज
थोड़ी देर चुप रहा, फिर
कहने लगा -
मैं तो नहीं करता विश्वास
अरे! पूरा देश जल रहा है
और इस आग का पता
किसी को नहीं चल रहा है ?
आये दिन अखबार में
हर दूसरे समाचार में
कश्मीर से कन्याकुमारी तक
राजस्थान से असम तक
कहीं दंगों की बाढ़
कहीं आरक्षण की लपटें
कहीं बमों के धमाके
कहीं उग्रवादियों से झड़पें

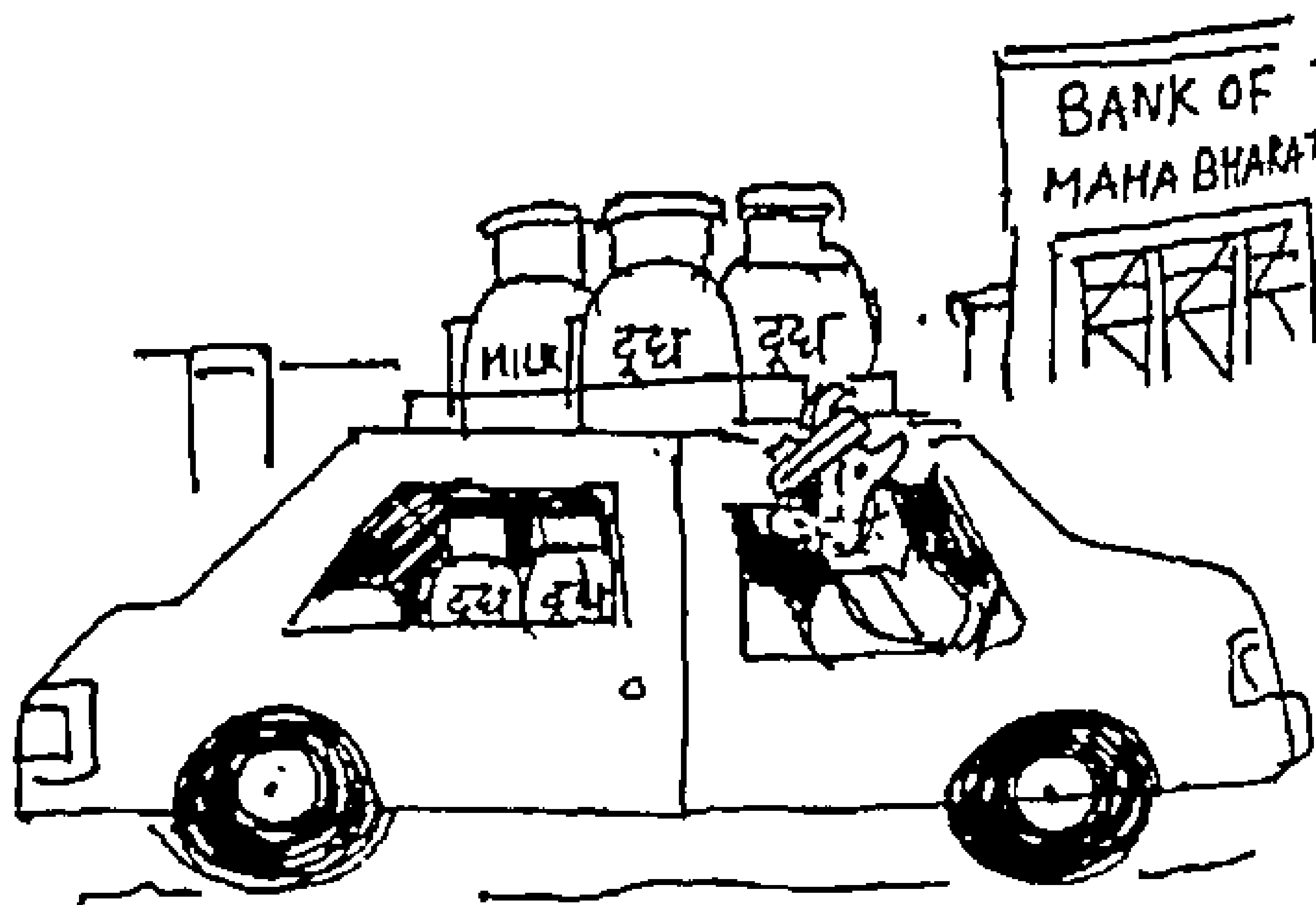


एक जगह हो तो आपको बताएं
आपको कहां तक गिनाएं
मुझे तो अंकल! जब भी
नक्शा मेरे पास होता है
तब ही जलते हुए
देश का एहसास होता है
जाने कैसा हो जाता है?
मन रोता है और सोचता हूं कि
लोगों की भगवान पर
अगाध श्रद्धा है
उनके होने का है पूर्ण विश्वास
लेकिन जो कुछ हो रहा है
हमारी आंखों के सामने
हमारे आस-पास
उसके लिए कोई
कुछ भी नहीं कर रहा है जतन
अगर यूं ही धधकता रहा
अपना ये वतन, तो
हम सब स्वाहा हो जायेंगे
अंकल! आप इसे बचालो
आप ही कोई रास्ता निकालो
मुझे लगा कि बच्चे की बात
मेरे मन पे गहरा असर
दिखा रही है – वो पीड़ा हमें क्यों
नहीं...
हम बड़ों को क्यों नहीं सता रही है?



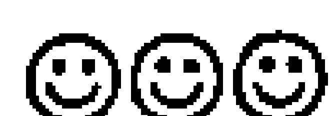
साक्षरता

दूध वाले ने
बैंक में चैक दिया अंगूठा लगाकर
बाबू व्यंग्य में
बोला मुस्करा कर –
मान्यवर! कितना अच्छा होता,
आप अपने कर-कमलों से
चैक पर हस्ताक्षर करने
की कृपा करते?
मित्रो! दूधवाला अनपढ़ था
उसने उत्तर दिया डरते-डरते –
मैं निरक्षर हूं
मैं अनपढ़ हूं
अपने हस्ताक्षर कैसे करूं?
बाबू इस पर
और इतराते हुए
दोनों हाथ नचाते हुए बोला –



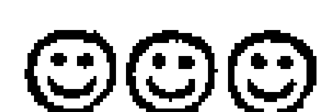
श्रीमान्! फिर तो
आप क्षमा करें
इस चैक को अपने पास ही
जमा करें, अभी तो आप
पधारें, घर जाएं और
जब भी हस्ताक्षर कर पाएं
बैंक आयें और चैक भुनवाएं
आपके पधारने का धन्यवाद!
दोस्तो! उसके बाद
दूधवाले को बाबू की बात
और व्यंग्य चुभता रहा दिन-रात
कुछ दिन तो उसके लिए रहा
काला अक्षर भैंस बराबर
मगर, उसने अब
हर भैंस को मानना
शुरू कर दिया था अक्षर
एक दिन उसने भैंस को
बुलाकर कहा - आ! आ!
पाडे ,को कहा ऐ! ऐ! और
धीरे-धीरे वह हर
अक्षर के पीछे पड़ता रहा
साक्षरता के पथ पर बढ़ता रहा
उसे अपना लक्ष्य दिखा भी
अंततः वह पढ़ा भी
और लिखा भी
इन दिनों वह
बहुत बड़ी डेरी चलाता है
बैंक में कार से आता-जाता है
और सबसे पहले उस बाबू के आगे
शीश नवाता है
उसे अपना गुरु बताता है
बाबू को ग्लानि रहती है कि

उसने कभी किसी पर
व्यंग्य कर दिया था
और निरक्षर यह सोचता है कि
उसने जीवन में रंग भर दिया था
तो मित्रो! कोई अनपढ़ है
उसे पढ़ा सकते हो तो पढ़ाओ
कम से कम उस निरक्षर की
हंसी तो मत उड़ाओ
छोटी-छोटी बातों की।



बीमा कराले

गांव का सीधा-सादा युवक
और शहर की छोरी
चंट, चालाक, चतुर
एक नंबर की चटोरी
दोनों में हो गया प्यार
लड़का बोला-जानेमन! जानेबहार!
मैं तुम्हारे बिन एक पल भी
जिन्दा नहीं रह पाऊंगा
तुमने शादी के लिए
हां नहीं की तो मर जाऊंगा
लड़की बोली
पहले तू अपना
बीमा करवाले और
बीवी की जगह मेरा नाम भरवाले
फिर तेरे
मन में जो आए
खुशी-खुशी करना
चाहे तो रेल से कट मरना
चाहे चुल्लू-भर
पानी में डूब मरना।

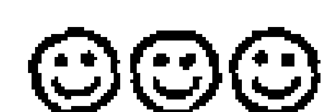


पॉकिटमार (जेबकतरा)

एक जेबकतरे ने
भरे-बाजार मेरी जेब से
पर्स उड़ा लिया
मैंने उसे पकड़ा
उसने चाकू निकाला
और खुद को छुड़ा लिया
घटना की रिपोर्ट लिखाने
मैं भागा सीधा थाने
थानेदार मुझे देख मुस्कराया
उसने हवा में
अपना डंडा लहराया
बोला – कुछ बचा भी है
तेरे पास ?
मैं बोला – ये बचे हैं सिर्फ पचास
रुपये लेकर उसने
अपनी जेब में डाले



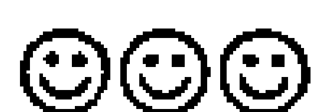
बोला – जा! मुंशी के पास
रिपोर्ट लिखा ले
मुंशी बोला – पचास रुपये
तूने साहब को दिये?
हमें भी कुछ दो
चाय-पानी के लिए
हमने कुछ नहीं है
कहकर अपनी मुंडी हिलायी
वो बोला – ऐसा है भाई!
तेरा केस भी देखेंगे
रिपोर्ट बाद में लिखेंगे
दिन-भर का मैं भूखा-प्यासा
देखा किया तमाशा
खाकी वर्दी, गंदी भाषा
थप्पड़, घूंसे, डंडा, गाली
कितनी अच्छी कार्यप्रणाली
तभी वो जेबकतरा
मोटरसाइकिल से उतरा
और थानेदार के
कमरे में घुसा
उस कमरे में सहसा
लगने लगे ठहाके
हम समझ गये कि
क्यों होती हैं चोरियां?
क्यों पड़ते हैं डाके?
हम अपनी जान बचाके
बिना रिपोर्ट लिखाये
अपने घर लौट आये
और जान गए, पहचान गए
कि गड़बड़ कहां है?
अपराधों के वृक्ष की जड़
यहां है, सिर्फ यहां है।



आतंकवादी से इंटरव्यू

हमने एक आत्मसमर्पण
किए हुए आतंकवादी से
इंटरव्यू लिया और
उससे यह प्रश्न किया कि
आप में यकायक इतना
महान परिवर्तन कैसे आया?
उसने मुझे बतलाया कि
कल जैसे ही मैंने
एक घर में आग लगाई
एक नन्ही बच्ची चिल्लाई –
पापा–पापा! देखो
अपना घर जल गया
आज का तो सारा दिन ही
खराब निकल गया
कल मैंने एक छोटा–सा
घर बनाया था
उसे बड़े भैया ने तोड़ दिया
और दीदी के घर को
गैया ने तोड़ दिया
मैंने किसी को कुछ नहीं बताया
परेशान होती रही
अकेले में चुपचाप रोती रही
तो पत्रकारजी!
बच्ची की बात सुन
मुझे भी अपना बचपन
याद आया था
मैंने भी एक छोटा–सा
घर बनाया था
झंडियां लगाई थी

फूलों से सजाया था
दिन-भर घर-घर
खेलता रहा था
उस दिन स्कूल भी
नहीं गया था
घर बनाने की धुन में
सब-कुछ भूल गया था
तभी वहां लड़ते हुए
दो सांड आ गये
और मेरे घर को बिखरा गये
जब बच्ची चिल्लाई तो
मेरी आंखें भर आईं
जिसने मेरे अन्तर्मन को झिंझोड़ दिया
और मैंने आतंकवाद का
रास्ता छोड़ दिया
यह सोचकर कि एक घर कितनी
मुश्किल से बनता है
और इस देश की
भोली-भाली बेकसूर
जनता है, उसे हम
किस बात की
सजा दे रहे हैं? और
जिनके हाथ की हम कठपुतली हैं
वे इस खेल का मजा ले रहे हैं।



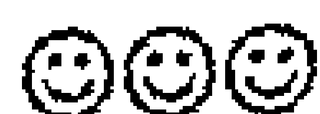
स्वदेशी

तन स्वदेशी, मन स्वदेशी
और अपना धन स्वदेशी
फिर भी अपना रहे हैं
विदेशी माल – यह देशी घोड़ी
और वह पश्चिम की चाल
कैसी उलटबांसी है यह भैया!
कि यूरो जा रहा है ऊपर और
नीचे आ रहा है रुपया
जगह–जगह बजने लगा है
डॉलर का डंका और वे
खड़ी करते जा रहे हैं
नित नई सोने की लंका
मदारी आते हैं, डुगडुगी बजाते हैं



विज्ञापनों से लुभाते हैं और
हम आंखों वाले होकर भी
उल्लू बन जाते हैं
यह नाश नहीं तो क्या?
सवा सत्यानाश है
नीम और हल्दी तक का
पेटेंट उनके पास है
लगता है नदियों की ओर
लौट रहा है समन्दर
एक साथ अन्धे, बहरे
और गूंगे हो गये हैं
गांधीजी के तीनों बन्दर
अरे भारतीय मन!
तू कितना है भोला?
कि गाय का दूध छोड़कर
पी रहा है कीटनाशकों से
भरा हुआ कोकाकोला
अपने ही घर में रहकर
अपनी संस्कृति से डरता है
नमस्ते, वंदेमातरम् की जगह
हैलो! हैलो! करता है
नकल भी तेरी यह
कितनी है निकम्मी कि
मां, बाप भी बन गये हैं.
डैडी और मम्मी
कैसा है यह करिश्मा
सबकी आंखों पर चढ़ गया है
विदेशी चश्मा
पीढ़ी की पीढ़ी
होती जा रही है खराब
छोटे धड़ल्ले से पी रहे हैं
विदेशी शराब, और

छोरियां तो और भी हैं लाजवाब
आज किसी की हैं तो
कल किसी की
क्लबों में नाचती हैं और
होटलों में पीती हैं
बीयर और व्हिस्की
शब्दपुत्र! तू जाग!
तुझे सबको जगाना है
भटके हुए कदमों को रोकना है
भारतीयता का
पाठ पढ़ाना है और
विदेशी भूत को मारकर भगाना है
एक बार फिर गूंजेगी
जय भारत की बोली
एक बार फिर याद आएगी
गांधीजी के द्वारा जलाई हुई
विदेशी वस्त्रों की होली
और एक बार फिर आगे बढ़ेगी
स्वदेशी के भक्तों की टोली
बढ़ते हुए कदम
क्या कभी रुके हैं?
सही मार्ग पर चलना है
उससे नहीं टलना है
इसलिए दोस्तो! साथ में आओ
स्वावलंबन के झंडे को लहराओ
और गर्व से स्वदेशी अपनाओ
बस, केवल एक ही आइडिया
मेड इन इंडिया
मेड इन इंडिया
मेड इन इंडिया।

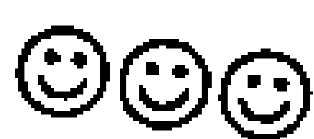


नये युग के नये अर्जुन

दुनिया में
एक से एक बढ़कर
वाहन हैं, स्कूटर हैं, कार हैं
हवाई जहाज हैं और
अन्तरिक्षयान हैं पर
लक्ष्मी के लिए तो आज भी
उल्लू ही महान है
उल्लू पर वह
इतना विश्वास करती है कि न
आउटडेटेड मानती है
न राइटआफ करती है
नये टेंडर तक नहीं निकालती है
अनुबंधित वाहन की
बात हो, तो भी टालती है
और तो और, उल्लू की सेवा
उसे इतनी भाती है कि वह
जहां ले जाए
वहीं चली जाती है
यही कारण है कि
शताब्दियों से वे ही लोग



धनवान हैं और वे ही
हट्टे-कट्टे हैं, जो या तो
उल्लू हैं या उल्लू के पट्ठे हैं।
फिर क्यों देर करते हो?
सफल होना हो तो
आप भी यह फार्मूला अपनाओ
दो के उल्लू बनो
बीस को उल्लू बनाओ
उल्लू पर गजल लिखो
उल्लू पे कसीदा लिखो
अपना उल्लू सीधा करो
चाहे जैसे भी हो
इसे गाली की तरह मत लो
इसकी कीमत को पहचानो
बी.ए. या एम.ए. की
डिग्री से भी बड़ी मानो
ऐसा करोगे तो
आपकी विपदाएं छंट जाएंगी
उल्लू को पटाओगे तो
लक्ष्मी आप ही पट जाएंगी
चोरियां भी करोगे तो
साहूकार कहलाओगे
बड़े नेताओं की तरह
बचते ही जाओगे
उल्लू की सेवा में ही
आपका उद्धार है
नये युग के नए अर्जुन सुन!
मेरी गीता का तो यही सार है
उल्लू की करामात तो यह है कि
देवी इस कदर रीझ जाएगी कि
छप्पर पड़ौसी का फटेगा पर
लक्ष्मी आपके घर आएगी।



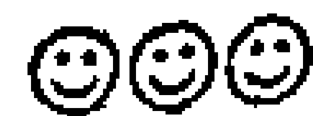
मजदूर नेता

मजदूर नेता मंत्रीजी से भी
अपने को बड़ा समझता था
कारण यह था – मंत्री को
चुनाव में उसने ही जिताया था
स्कूल में बचपन भी
साथ-साथ बिताया था
दोनों लंगोटिया यार थे
पर कबाड़ची थे
दोनों अपने-अपने क्षेत्र में
अखाड़ची थे



एक बार नहीं हुआ
उसका कोई काज तो
मजदूर नेता हो गया नाराज
फौरन हड़ताल का आह्वान किया
नारे लगवाये, भाषण दिये
और उद्योगों का चक्का जाम किया
अपनी मांगों को लेकर ऐंठ गया
मंत्री के इस्तीफे की खातिर
आमरण अनशन पर बैठ गया
मुख्यमंत्री को भी पत्र दिया
अखबारों में उसका प्रचार
सर्वत्र किया
आखिर मंत्री ने
मजदूर नेता को
बातचीत के लिए बुलाया
उससे हाथ मिलाया
और समझाया – क्यों
एक-दूसरे की पोल खोलते हो ?
झूठ भी सच की
तरह बोलते हो
मैंने भी तुम्हारा विरोधी
तैयार कर लिया है
उसे एक लाख का
अभी-अभी चंदा दिया है
मुझे सब पता है, तुमने
जो चंदा इकट्ठा किया था
उसे अकेले ही डकार गए
पिछली हड़ताल तुड़वाने
के लिए तुम्हें
एक लाख रुपये दिये थे
क्या वे भी बेकार गये ?
हमेशा ध्यान रक्खो

मगरमच्छ छोटे जीवों को
खा जाता है, छोटा पाप
बड़े में समा जाता है
अरे! समस्या कोई भी हो
जो समय से भी नहीं सुलझे
वह मारामार से सुलझती है
अरे! अब भी समझ जाओ
ताली दोनों हाथों से बजती है
अंत में दोनों ने
गुप्त समझौता किया
मंत्री ने अपने दोस्त की
साख जमा दी
मांगों को लेकर
एक जांच कमेटी बिठा दी
मजदूर नेता ने
मंत्री के हाथ से जूस पीया
फोटोग्राफर ने
फोटो खींच लिया
अनशन तोड़ दिया और
मजदूरों को मरने के लिए
अधर में छोड़ दिया
इस आश्वासन के साथ कि
मजदूरों एक हो जाओ
अगला संघर्ष निर्णायक होगा।

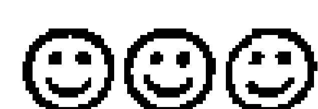


शादी के अनुभव

शादी की सालगिरह का पहला साल
अच्छा लगता है ससुराल
वे तैरते सपने, वे रेशमी गाल
वे शर्मीली आंखें
वह शुरु-शुरु की मुलाकात
वे रंगीन रातें, वे मीठी-मीठी बातें
दहेज का मनभावन माल सचमुच
बहुत ही अच्छा लगता है वह



पहला साल
दूसरा साल
जवानी का उठता हुआ उबाल
घर-आंगन में
पहला-पहला बाल-गोपाल
वाह रे प्रभु! तेरा कमाल
तीसरा साल - अबीर-गुलाल
थोड़ी खुशियां - थोड़ा मलाल
चौथा साल
जैसे मकड़ी का जाल
आर्थिक झंझट, जी का जंजाल
पांचवां साल - ये बच्चों की पलटन
यह मंहगाई की चाल
फटे कपड़े और फटा हाल
छठा साल - एकदम कंगाल
सातवां साल - पड़ गया हो
जैसे कोई भीषण अकाल
आठवां साल - खड़ा हो गया है
एक मुसीबतों का पहाड़
विशाल और विकराल
नवां साल - देता है हथियार डाल
दसवां साल - हे प्रभो!
अब तो
अपनी माया को संभाल
किसी तरह से इस बला को टाल
लड़खड़ा रही हैं टांगें
पिचक गए हैं गाल
कैसा है ये जीवन का जंजाल?
शादी एक ऐसा फल है
जो खाए सो पछताए,
जो न खाए वो भी पछताए
अच्छा है जो भी गुजर जाए।



कुंवारे थे

वे दिन भी कितने अच्छे थे
वे दिन भी कितने प्यारे थे
जब हम कुंवारे थे
कॉलेज कन्याओं के हम
आंखों के तारे थे

सपनों में भी कई कुमारियां
मन बहलाती थी
रश्मि हो या स्वीटी
दोनों मिलने आती थीं

अनुराधा तो चुपके-चुपके
मुझ पर मरती थी
शीला मुझे देखकर



ठंडी आहें भरती थी

ड्रेसें बदल-बदल कर आतीं
पिकनिक हो जाती
मेरे खातिर उनमें
कम्पीटीशन हो जाती

नखरों-नाज-अदाओं से
वे मुझको ठगती थी
कोई भी मिस हो
मुझको तो मिश्री लगती थी

छेड़छाड़ की नौबत आती
कभी गुलालों पर
कभी लिपस्टिक लग
जाती थी मेरे गालों पर
मस्ती के दिन थे
खुशियों के मैटर पाते थे
कई लिफाफों में तो
बस! लव लैटर आते थे

जब तक कुंवारापन था
बस! वारे-न्यारे थे
कॉलेज कन्याओं के
हम आंखों के तारे थे

कुंआरापन है बैंक ड्राफ्ट
रुपयों की गड्डी है
शादीशुदा व्यक्ति तो
बस! अखबारी रद्दी है

शादी का जब कार्ड छपा
तो किस्मत यों ऐंठी
जितनी भी प्रेयसियां थीं
सब बहिनें बन बैठी

हाय डीअर – हलो डार्लिंग
अब तक कहती थीं
जो मुझ पर जान लुटाती
आगे-पीछे रहती थीं

लेकिन अब वे बदल गई हैं
गिफ्ट नहीं देती हैं
मैं आगे-पीछे डोलूं पर वे
लिफ्ट नहीं देती हैं

फोन करुं तो सीधे मुंह
वे बात नहीं करतीं
अब पहले जैसे गालों पर
वे हाथ नहीं धरतीं

उन्हें बुलाऊं तो उत्तर में
किंतु-परन्तु है
शादीशुदा व्यक्ति तो
सिर्फ घरेलू जंतु है

बुझे हुए दीपक जो
पहले दिव्य सितारे थे
वे दिन भी कितने अच्छे थे
जब हम कुंआरे थे
कॉलेज-कन्याओं के
हम आंखों के तारे थे

मन को मिला सुकून
एक दिन राहत यों पाया
मुझसे मिलने एक पुराना
यार-दोस्त आया

बोला मेरी भी तो तब
रंगीन जवानी थी
पूंजी की भरपूर छूट
तबीयत मनमानी थी

नया-नया प्रेमी था
उनको समझ नहीं पाया
इश्कमिजाजी किशोरियों की
यह कैसी माया ?

खुलकर प्रेम जताती
वह बाहें फैलाती थीं
बिकनी पहने साथ
तैरने जाती थीं

जाने कितने पोज बनाये
मस्ती भर जाती
हिल-स्टेशन पर, होटल में
साथ ठहर जाती

प्रेम बढ़ाने के उसने
वे नाटक दिखलाए
जाने कब चुपके-चुपके
कुछ फोटो खिंचवाए

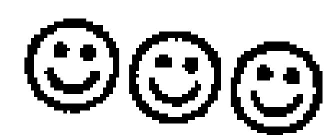
नजर तिजौरी पर हो जिसकी
वही खेल करती

फिर फोटो दिखला-दिखलाकर
ब्लेकमेल करती

लाखों रुपये फूंक दिये
आखिर राहत पाई
जिसे प्रेयसी माना
उससे राखी बंधवाई

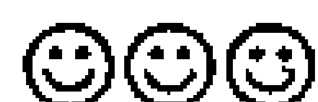
हमने सोचा शुक्र खुदा का
कितने अच्छे हैं
हम हैं, वो हैं
मुन्ना-मुन्नी जैसे बच्चे हैं

अच्छा हुआ कि नहीं
आज तक हम भी कुंवारे हैं
मस्ती का जीवन है
मस्ती के ठाठ हमारे हैं।



मूर्ख से शादी (भोंदू)

लड़की के पास थी सुन्दरता
लड़के के पास था पैसा
थोड़े ही दिनों में
मामला जमा कुछ ऐसा
बात शादी तक जा पहुंची तो
लड़के का इंटरव्यू लेते हुए
लड़की ने एक बात पूछी
मैं क्लब में जाऊंगी
रात को लेट आऊंगी
तेरे पैसे से खूब मौज उड़ाऊंगी
जो भी मांगूंगी तू चुपचाप देगा
लड़के ने कहा ओ.के.
आइ एम रेडी, सब चलेगा
लड़की मुस्कराकर बोली
तुमने सब-कुछ स्वीकार कर लिया?
तुम अक्ल से ओंधू निकले
मैं तो समझदार
मर्द की तलाश में थी
तुम तो बिल्कुल भोंदू निकले
जो बीबी से इतना डरता है
इसलिए मेरा मन
ऐसे मूर्ख से
शादी करने को
नहीं करता है।

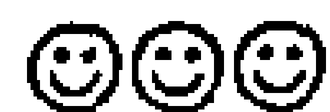


बोलो कौन?

अभी-अभी उड़ चला यहां से
पंछी था वह कौन?
मुन्ना मौन, मुन्नी मौन
फुदक-फुदक कर चुपके-चुपके
पास तुम्हारे आए
चौकन्ना है, आहट पाते ही
फौरन उड़ जाए,
बोलो कौन?
मुन्ना मौन, मुन्नी मौन
काला-काला है, गर्दन टेढ़ी कर
ताक लगाता, ध्यान नहीं दो तो
थाली से रोटी ले उड़ जाता
बोलो कौन?
मुन्ना मौन, मुन्नी मौन
खड़ा सवेरे इस मुंडेर पर



आकर तुम्हें जगाता
कांव-कांव करता रहता
लंबी परवाज लगाये
अब तो कुछ अंदाज लगाओ
सोचो, उसका नाम बताओ
तुम तो बहुत देर से जगते
वह कब का जागा है
मुन्ना बोला, मुन्नी बोली
हां, वह तो कागा है
काला हो तो क्या होता है?
नहीं कोई हौवा है
दादाजी ने नाम बताया तो था
हां, वह तो कौआ है।



जेल में मुलाकात

एक दिन अकस्मात्!
मन में आई यह बात
कि जेल में अबकी बार
कैदियों से
की जाय मुलाकात
हमने जेलर को
फोन किया
और अपना
परिचय दिया
अपने मन की
बात बताई
कैदियों से
इन्टरव्यू लेने की
इच्छा जताई
और हमें इसकी
अनुमति मिल गई
उनकी कथा,
व्यथा सुनी तो
अन्तरात्मा हिल गई
सबसे पहले मिला जो कैदी
हमने पूछा – आप यहां कैसे?
वह बोला –
आप मानें, न मानें
हुआ ऐसे, मैं गया था सर!
रोजगार दफ्तर

रोजगार पाने
किस्मत में क्या लिखा था
खुदा जाने
उसी वक्त एक शख्स
कार से उतरते हुए
दांतों से नाखून कुतरते हुए
उंगलियों से बालों को संवारते हुए
हमको प्यार से निहारते हुए

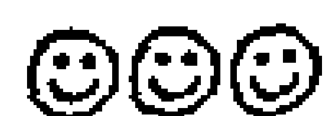


बोला – मैं तुम्हें रोजगार दूंगा
दो दिन के बदले पूरी पगार दूंगा
ये एडवांस में दस हजार रुपये लो
शाम को मेरे दफ्तर में मिलो
शाम को वहां पहुंचते ही
उसने पुलिस से पकड़वा दिया
किसी व्यक्ति की हत्या करवाके
जुर्म मेरे माथे मंढवा दिया
साक्ष्य के अभाव में
हालांकि मैं छूट जाऊंगा
लेकिन तब·तक
मैं भीतर तक टूट जाऊंगा
दूसरे कैदी ने बताया
एक शाम
बस से जा रहा था
मैं अपने गांव
उसी बस में एक आदमी मिला
शक्ल से शरीफ, एकदम भोला
मेरे पास रखकर सूटकेस और झोला
मुझे कहा – अपने पास
यह सामान रखना
मैं एक मिनट में आता हूं
जरा ध्यान रखना
थोड़ी ही देर में
एक्साइज वाले आ गये
तलाशी ली, पास रखे सूटकेस में
स्मैक की थैली पा गये
उस अनजान आदमी की चतुराई
मुझे जेल के सीखचों तक खींच लाई
कई बार मैंने उस क्षण
उस घड़ी को कोसा
हम क्यों किसी पर

कर लेते हैं भरोसा?
मित्रो! तीसरे कैदी की
बढ़ी हुई दाढ़ी
और उलझे हुए बाल थे
बिल्कुल पागलों जैसे हाल थे
उसे पूछा –
आप किस सिलसिले में?
बोला, चुनाव हो रहे थे
हमारे जिले में
किराए के गुंडों ने मतदान केन्द्र लूटा
चुनाव अधिकारी की हत्या करदी
लोगों को बेरहमी से कूटा
मतपत्र फाड़कर
मेरे खेत में बिखरा गए
और पुलिस वाले
मुझे लेकर यहां आ गए
मतपेटियां लुटवाने वाले
चुनाव में करके घोटाले
बड़े नेता बनकर
लूट रहे हैं सत्ता का मजा
और हम बिना कसूर
भोग रहे हैं
उनके कुकर्मों की सजा
चौथे कैदी ने बताया कि
मैं अपनी मर्जी से यहां थोड़े ही आया
वन अधिकारी द्वारा जंगल में
हरे पेड़ काटने की शिकायत
मैंने उच्चाधिकारी तक पहुंचाई
दूसरे ही दिन यह आफत आई
उसने मेरे घर के बाहर
मरा हुआ मोर पटकवा दिया.
और उसके अवैध शिकार के जुर्म में

यहां लटकवा दिया
हमने पांचवें को टटोला
तो वह बोला – हां मैंने हत्या की है
जिसका मुझे न कोई दुख है
न सन्ताप, न पीड़ा है
न कोई पश्चात्ताप है
दहेज के लोभी ससुराल वालों ने
मेरी बेटी को
जिन्दा जला दिया था
उनका कुछ भी नहीं बिगड़ा
पुलिस को पैसा खिला दिया था
और मैंने अपनी बेटी की
हत्या का उनसे बदला लिया था
उस पूरे परिवार को
मौत के घाट उतार दिया था
आत्मसमर्पण कर
जुर्म कबूल चुका हूं
यह सब कैसे हुआ ? कब हुआ ?
भूल चुका हूं
सपने में अब मेरी बेटी
रोज आती है
कुछ बोलती नहीं
बस! मुस्कराती है
कैदियों का इंटरव्यू लेकर
शाम को घर लौट आया था
किन्तु भीतर ही भीतर
एक सवाल
मेरे दिमाग को जकड़ रहा है
भ्रष्ट नेता, बेईमान पुलिस वाले
हरामखोर अफसर
सफेदपोश गुंडों को
क्यों नहीं पकड़ रहे हैं ?

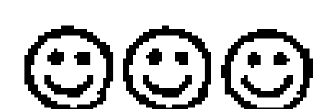
कानून की हर धारा
इनके सामने
क्यों हर बार फेल हो जाती है
अपराध ये करते हैं और
निर्दोषों को जेल हो जाती है
कब मिलेगी हार इन्हें
इस घृणित खेल में
जाने कब पहुंचेंगे
ये असली अपराधी जेल में
जाने कब पहुंचेंगे
ये असली अपराधी जेल में।



वह और मैं

कल एक मित्र ने कहा
अजी गौरीशंकरजी!
यह क्या हालत बना रखी है?
अपने को इतना पीछे
क्यों धकियाते हो?
औरत को इतना
सिर पे क्यों चढ़ाते हो?
मैंने कहा – दोस्त!
जबसे लालू ने
राबड़ी को आगे बढ़ाया है
मेरे घर में भी तूफान आया है
कहती है –
मैं भी वैसा ही काज करूंगी
अब तक तो घर में करती थी
अब बाहर भी राज करूंगी
दोस्त बोला – अरे भोला!
ये औरतें बड़ी छलछंद होती हैं
ब्रह्माजी वाला फंद होती हैं
चखने में तो गुलकन्द होती हैं
पर सच पूछो तो
जालिमचंद होती हैं
ये ममता बनर्जी
की तरह ऐंठ सकती हैं
जयललिता की तरह
जब चाहें चेंट सकती हैं
किसी साहबसिंह को धक्का देकर
सुषमा स्वराज की तरह
दिल्ली की गद्दी पर बैठ सकती हैं
ये मेनका की तरह
अकेली होकर भी तन सकती हैं
और सोनिया की तरह

सुपर बॉस बन सकती हैं .
जिसे तुम राबड़ी कहते हो ना
वह दिखने में तो है भोली
पर है थ्री-नॉट-थ्री की गोली
इनके फंदे से बाहर आओगे
तभी बच पाओगे
मैंने कहा – दोस्त!
तेरा उपदेश तो मानने वाला है
पर क्या करूं?
मेरे नाम में ही खोट है
यह सब उसी का गड़बड़झाला है
मेरे नाम का जो बही-खाता है
उसमें पहले गौरी
और पीछे शंकर आता है
अब तो मैंने अपने मन को
मना लिया है
अपने को उसका पिछलग्गू
बना लिया है
अब तो मैं मान गया हूं कि
मैं ट्रोली हूं तो वह ट्रेक्टर है
मैं पैरा हूं तो वह चैप्टर है
मैं सैनिक हूं तो वह बंकर है
मैं पैट्रोल का खाली पंप हूं
तो वह भरा हुआ टैंकर है
वह शिला है तो मैं कंकर हूं
वह गौरी है तो मैं
बेचारा शंकर हूं
वह बढ़िया कॉफी है तो मैं
चाय और वह भी चालू हूं
खट्टी ही सही
वह मेरी राबड़ी है तो
मैं उसका लालू हूं
वह मेरी..........!

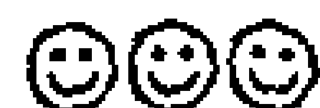


भूकम्प/सुनामी

कुदरत का क्षणिक प्रहार हुआ
लाखों का ही संहार हुआ
इस हृदय-विदारक घटना से
दुखमय पूरा संसार हुआ
इस क्रूर काल की घटना को
कर याद दुखी हो जाता हूं
मैं भारी मन से उन्हें आज
शब्दों के सुमन चढ़ाता हूं।
शब्द बांधने में असमर्थ हैं
कुदरत का यह नजारा
पता नहीं क्यों चढ़ गया था?
प्रकृति का प्रकोप पारा
इसमें न कोई तर्क है, न कुतर्क
लगता था पृथ्वी पर उतर आया है
जैसे रौरव नर्क।
महाकाल का महारास
और जगह-जगह बिखर गई थी
इनसानियत की ठंडी लाश
मुस्काये सपने, क्वांरे अरमान
खामोश चीखें और
पथराये होंठों पर तैरती
बुझी-बुझी मुस्कान
धरती जैसे अपने धैर्य से
डिग गई थी
लोच आ गई थी भूगोल में
बस! वीरानगी ही वीरानगी थी
पूरे माहौल में
यही तो वह दृश्य है जहां
एक साथ सोये थे
दादा और पोते निःसंग

और दूर तक फैले हैं
मांस के टुकड़े
और टूटे हुए अंग
मौत की आदिम हवस
और खून के कतरों की गंध
महाकाल के महाविनाश का
एक शोध प्रबंध
एक प्रलयंकारी निबंध
जरूर किसी ने
धरती के धीरज के साथ
छेड़छाड़ की होगी
उसके शील के साथ
खिलवाड़ की होगी
बिगाड़े होंगे उसकी
संरचना के संतुलन
डिगाये होंगे उसके
भीतरी समीकरण
जब-जब भी यह संतुलन
बिगड़ता है
महामारी, भीषण अकाल आते हैं
सब-कुछ वीरान कर जाते हैं
महाराष्ट्र का भूकंप
और चैन्नई की सुनामी
इसी के तो नमूने हैं
सुनामी ने लोगों का
सुख-चैन छीना है
सब-कुछ सूना-सूना-सा है
सन्नाटे के कालपात्र से
कौन पूछे ?
कहां गये वे लोग ?
जो कल तक जिंदा थे ?
गई रात को जिन्होंने

कल के सूरज के लिए
कई सवाल संजोये
खुशहाली के
नये बीज बोये थे
सब-कुछ सूना-सूना
सब-कुछ शांत
जैसे कालचक्र ने
निगल लिया हो
सबको एक साथ
बचे हैं पत्थरों के ढेर
टूटी बल्लियां, गिरे हुए पेड़
दूर तक पसरा एक निःसंग सन्नाटा
याद कर रहे हैं
कुदरत के हाथ का एक चांटा
इसी सन्नाटे में हमें
शोर को उपजाना है
किलकारियां और कोलाहल लाना है
बचपन का भोलापन
जवानी की ताजगी का साज
बुढ़ापे के अनुभवों के अंदाज
जगाने हैं धरती के हरियल सपने
जमाने हैं उसके धीरज के पाए
ताकि धरती फिर से
हिलने न पाये।



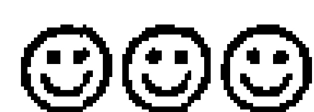
ज्योतिपर्व

ज्योतिपर्व है इस प्रकाश के अनुष्ठान में आओ
मन से मैल-तिमिर जीवन से कटुता-क्लेश मिटाओ
आंखों को अनुराग, अधर को मुस्कानों से भर दो
दीपशिखा तुम अन्तर्मन को भी आलोकित कर दो

मन की मन्दाकिनियों को तुम नक्षत्रों की सृष्टि दो
आर-पार जो देख सकें संजय वाली दृष्टि दो
रस का कलश इस तरह छलके सभी तृप्त हो जायें
नहीं किसी भी कोने में अंधियारा रहने पाये

शुभ्र ज्योत्स्ना से जीवन के पोर-पोर को भर दो
दीपशिखा तुम अन्तर्मन को भी आलोकित कर दो
राष्ट्रविरोधी कृत्य, भ्रष्ट आचरण और घोटाले
फिर से कभी न चल पाएं ये धंधे काले-काले

फैले दिव्य प्रकाश, दिशाएं बन जाएं कल्याणी
भूमंडल में फिर से गूंजे वह भारत की वाणी
सबका जीवन मंगलमय हो, माते! ऐसा वर दो
दीपशिखा तुम अन्तर्मन को भी आलोकित कर दो

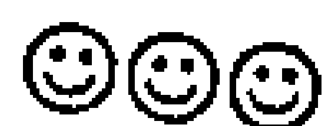


आरक्षण

योग्यता पर पड़ गई आरक्षण की मार
संरक्षण अयोग्यता को दे रही सरकार
अच्छे नहीं आसार देश का कर दिया बंटाढार
भाई-भाई में डाल दी बहुत बड़ी दरार
इस पर करिये पुनर्विचार
आप अपनी जाजम तो
भले ही जमाओ
पर उन्हें मत बरगलाओ
उनके हाथों में
बैसाखियां मत थमाओ
जो अपने पैरों पर
खड़े हो सकते हैं
अपनी योग्यता से
बड़े हो सकते हैं।
पोलियो की दवा
पांच वर्ष के भीतर ही
पिलाई जाती है
उसके बाद
बेअसर हो जाती है
यही बात आकाशवाणी
और दूरदर्शन से
बार-बार दोहरायी जाती है
आप बीमार को तो
दवा पिलाओ, पर
दवा बेचने के लिए
हरएक को
बीमार मत बनाओ
माना कि आपकी
शुगर कॉटेड पॉइजन की गोलियां
बहुत मीठी लगती हैं
विरोधियों को भी

अनूठी लगती हैं
लेकिन आप उनका
हित कर रहे हैं
या अपना हित?
यह उचित है या अनुचित?
आप इनमें
कुंठा का संचार कर रहे हैं
और अपनी
कुर्सी की खातिर
वोटों का प्रचार कर रहे हैं
आप वास्तव में
इनका भला चाहते हैं या
यूं ही मगरमच्छ के
आंसू बहाते हैं?
गर वास्तव में
इनका भला चाहते हैं तो
एम.एल.ए. या एम.पी.
के लिए
नये चेहरे सामने
क्यों नहीं लाते हैं?
बार-बार
उन्हें ही क्यों
घसीटे जाते हैं?
साधारण व्यक्ति
आरक्षण का लाभ
कहां उठा पाते हैं
एक घर के सभी
व्यक्ति आरक्षण का
लाभ उठाते हैं
दूसरे घर वाले
उन्हीं के भाई
मुंह ताकते रह जाते हैं
इस तरह से आप

असमानता, वर्गभेद बढ़ाते हैं
इस प्रकार से यह
मौलिक अधिकारों का हनन है
चारों ओर क्रन्दन ही क्रन्दन है
बालक अम्बेडकर
डॉ. अंबेडकर आरक्षण से
नहीं बने थे
शबरी ने भगवान श्रीराम
की तपस्या
आरक्षण से नहीं की थी
वाल्मीकि महर्षि वाल्मीकि
आरक्षण से नहीं कहलाए थे
एकलव्य ने
धनुर्विद्या का ज्ञान
आरक्षण से नहीं लिया था
एक अबोध बालक
दो वर्षों में बिना किसी
सहारे के दौड़ना सीख जाता है
और ये साठ सालों में
अपने पैरों पर
खड़े नहीं हो पाए
कृपया इसका
कारण तो समझाएं!
इसके लिए
जिम्मेदार कौन है ?
इस प्रश्न पर
मेरे देश का हरएक नेता
बिल्कुल मौन है।
इस प्रश्न पर मेरे देश का
हर नेता बिल्कुल मौन है।

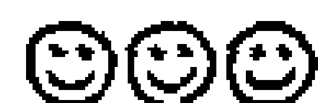


इच्छारूपी हाथी

दोस्तो!
एक सच्ची घटना, सच्ची बात
बाजार में से
जा रही थी किसी की
हाथी पर बारात
उस रात मैं भी
उधर से गुजर रहा था
किंतु, भीड़ से डर रहा था
मुझे घर जल्दी जाना था
एक जरूरी काम था
मगर, ट्रैफिक जाम था
तभी अचानक
एक अनहोना-सा
दृश्य घट गया
दूल्हा हाथी से उतरा
नीचे आया, सिर नवाया
और मेरे पांव से लिपट गया
बोला – बाबूजी! बाबूजी!
आपने मुझे पहचाना?
सच, सच बताना
मैं किंकर्तव्यविमूढ़-सा
आश्चर्यचकित
खड़ा-खड़ा चकरा रहा था
यह कौन है?
समझ नहीं पा रहा था
मेरी असमंजसता पर
वह मुस्करा रहा था
अब उसने ही राज खोला
और हंसते हुए बोला
याद करो
दस साल पहले

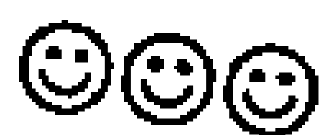
दशहरे के मेले में
जब सब बच्चे
पैसे देकर
हाथी पर बैठे इतरा रहे थे
तब मैं और
मेरा छोटा भाई
बार-बार हाथी पर
बैठने को ललचा रहे थे
हमारे पास
सवारी के पैसे नहीं थे
तब,
आपने पास बुलाकर
हाथी पर बैठने का
रुपया दिया था
बाबूजी! तब से ही
मैंने यह प्रण लिया था
मन ही मन ठान लिया था कि
मुझे हमेशा ऐसे ही
ऊपर चढ़ना है
खूब पढ़ना है
आगे, आगे, बहुत आगे बढ़ना है
आज अचानक
आपके दर्शन पाकर
मैं धन्य हो गया
मन पुनः उन्हीं
पुरानी यादों में खो गया
एक-एक दृश्य
याद आ गया
अचानक आज
मैं सौभाग्य से आपको पा गया
अब मैं आपको
शादी में साथ लेकर ही जाऊंगा
वरना फेरे नहीं खाऊंगा

आपका ऋण
मैं कैसे भूल पाऊंगा?
तो मित्रो! इस घटना ने
मेरे अन्तर्मन को छुआ
और एक सुखद
एहसास हुआ
अब मैं ईश्वर से
करता हूं यही दुआ कि
कहीं, कभी, कोई
गरीब बच्चा
किसी चीज के लिए ललचाए
कभी कोई ऐसी घटना
आपके साथ भी घट जाए
तो आप
इतना जरूर कष्ट उठाएं
उसे उसके इच्छारूपी
हाथी पर जरूर बिठाएं।
किसी बच्चे को
फीस की जरूरत हो या
पुस्तकें चाहिए!
आप उसकी मजबूरी का
पता तो लगाइये
उसकी जरूरत पूरी करवाइये.
हम बहुत-से पैसे,
ऐसे-वैसे ही लुटाते हैं
लेकिन कभी
असहायों के लिए
कोई साधन नहीं जुटाते हैं
और बच्चों के दिल
अभावों के हाथों
खिलौनों की तरह
टूट-टूट जाते हैं।



म्यूजियम

लोग, लुगाई
देख रहे थे म्यूजियम
पत्नी बोली
यहां रखी चीजों में
कुछ भी नहीं है दम
चलो! घर की तरफ
निकल लेते हैं हम
अरे! कम से कम
इन्हें ऐसे हथियार
नहीं दिखाने चाहिये
जिनका आजकल
नहीं है चलन
क्या फायदा
इन्हें देखने से
जिनमें नारी का हथियार
नहीं है बेलन।

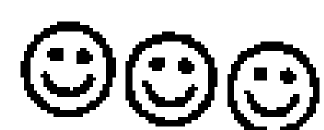


ब्याह, शादी, समारोह

जब भी कोई समारोह
अथवा ब्याह, शादी होती है
हम देखते हैं कि
उसमें लाखों रुपयों की
बरबादी होती है
लोग अनाप-शनाप
जूठन छोड़ देते हैं
हजारों रुपये के
पटाखे फोड़ देते हैं
सजावट के लिए
महंगे कालीन बिछाते हैं
आडम्बरों पर बेदर्दी से
अपना पैसा लुटाते हैं
तब मुझे



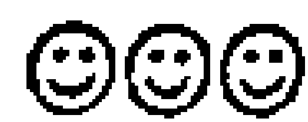
मासूम बच्चों के
चेहरे याद आते हैं
काश! इस धन से
इन निर्धन बच्चों का
बचपन संवारते तो
ये उपेक्षित, शोषित बच्चे
अपना मन नहीं मारते
ये उदास बेबस चेहरे
हंसते हुए दिखते
और इस देश का
नया इतिहास लिखते।

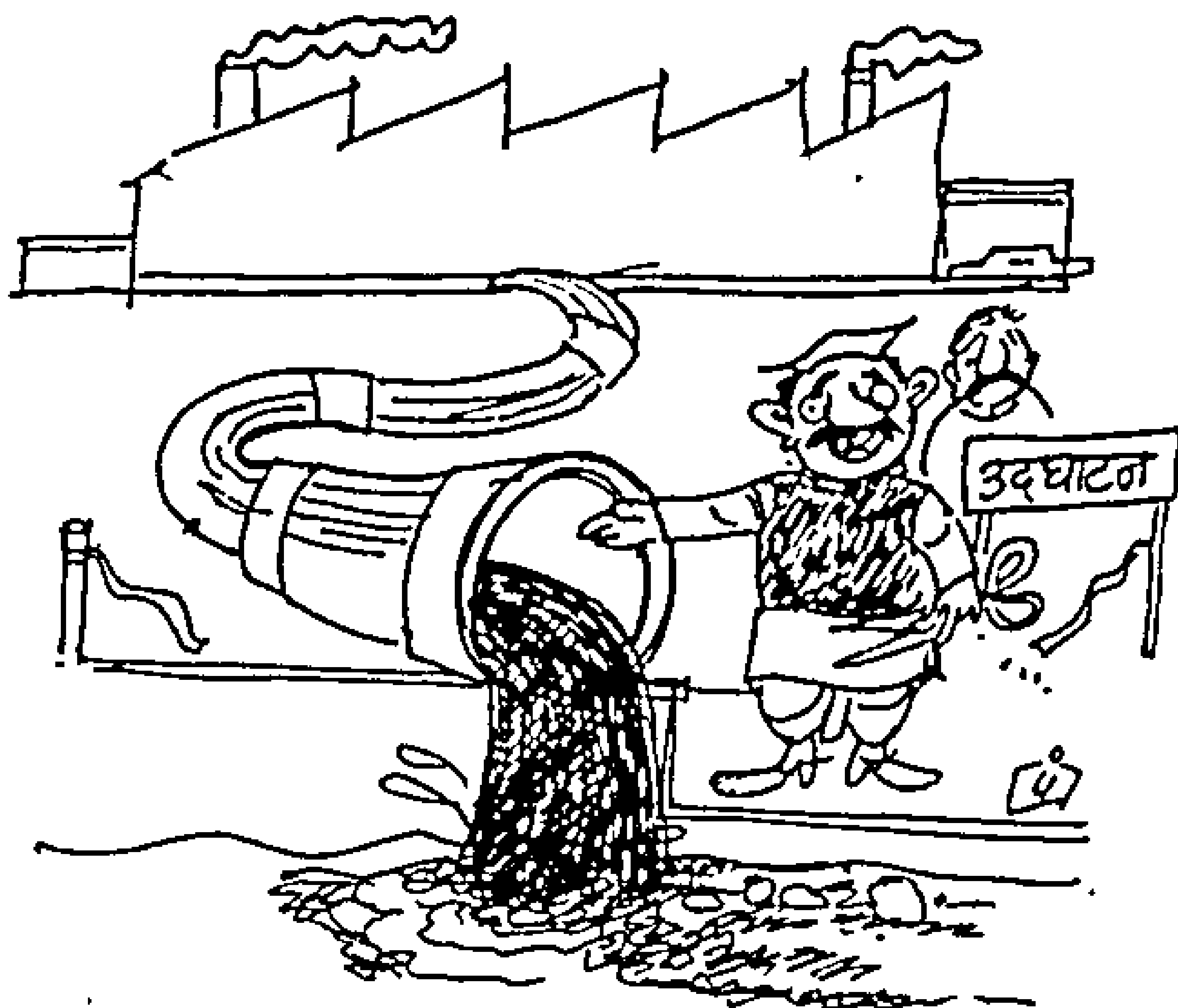


प्रदूषण - जल

पर्यावरण मंत्री के
शहर में कुछ रिश्तेदार थे
कुछ बेचारे चमचे
जो बेरोजगार थे
उन्होंने उनका बेरोजगारी रूपी
प्रदूषण मिटाया, नदी किनारे
फर्टिलाइजर का कारखाना
लगाने का जुगाड़ बिठाया
कारखाने का सारा कचरा
नदी में फैला है
शुद्ध जल नदी का अब
प्रदूषित है, गंदा है, मैला है
दोस्तो! अपनी-अपनी ताकत
और प्रभाव से जब सब ही
अपने हिसाब से
देश में कहीं वायु, कहीं ध्वनि

कहीं जल प्रदूषण फैलाते हैं
रात-दिन
पर्यावरण बचाओ – चिल्लाते हैं
इस धरती से
पहले हम
इन विदूषकों को
पर्यावरण के प्रदूषकों को
नहीं मिटायेंगे तो
शुद्ध वातावरण व
स्वच्छ पर्यावरण कैसे पायेंगे?



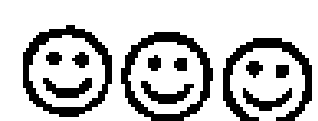


सौन्दर्य प्रतियोगिता

आजकल राष्ट्रीय और
अन्तरराष्ट्रीय
सौन्दर्य प्रतियोगिताएं
आयोजित होती हैं
जिनमें. सुन्दरियां
नाम-मात्र के वस्त्रों में
मंच पर शोभित होती हैं
प्रत्येक सुन्दरी



उन्मुक्त भाव से
करती है अंग-प्रदर्शन
सामने बैठे दर्शक भी
करते हैं नग्नता का दर्शन
जब भी कहीं कोई
नंगा दिखता है
कितना भद्दा, भौंडा और
बेढंगा दिखता है
इस कदर बेहूदगी ?
हमें तो आश्चर्य होता है
पता नहीं, इसमें
कौनसा सौन्दर्य होता है ?
आने वाली पीढ़ी को
ये क्या सिखा रहे हैं ?
क्या नग्न-प्रदर्शन से
यह दिखा रहे हैं कि
मनुष्य आदिकाल में
रहता था इस हाल में
भला ये भी
कोई इंसान हैं ?
बिल्कुल पशु समान हैं
सच तो यह है
मित्रो! ये नंगे
बेशर्मी ओढ़ लेते हैं
इस होड़ में वे
पशुओं तक को
पीछे छोड़ देते हैं।



धूम्रपान

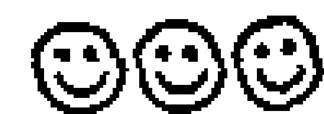
दोस्त बोला!
मैं जल्दी से जल्दी
स्वर्ग के सुख भोगना चाहता हूं
उपाय बताइये
मैंने कहा - खुलकर
धूम्रपान अपनाइये
बीड़ी हो या सिगरेट हो
हुक्का हो या शराब हो
या तम्बाकू का क्रेज
किसी भी बात से



मत करना परहेज
ऊपर वाले को
ज्योंही इस बात का
पता चल जाएगा
आपका खाता
वहां पर भी खुल जायेगा
क्यों सोचते हो
क्या होगा मरने के बाद कि
पत्नी विधवा हो जायेगी
और बच्चे अनाथ!
तुम्हें उससे क्या?
वे अपनी यात्रा
खुद तय करेंगे
भीख मांगेंगे या भूखों मरेंगे
सयानी लड़की
कुंआरी रह जाएगी
तो रहने दो
दुनिया बुरा-भला
कहेगी तो कहने दो
तुम तो अपना काम करो यार!
एक सिगरेट के
समाप्त होते ही
दूसरी के लिए रहो तैयार
एक पैग पीते ही
दूसरे का करो विचार
दोस्त ने कहा -
धूम्रपान, मदिरापान और स्वर्ग!
यह भला कैसा नाता है?
मैंने कहा - इनका पान करने वाला
इस लोक से उस लोक को
डायरेक्ट जाता है

न वीजा चाहिए
न पासपोर्ट का प्रमाण
न कोई रेल, न वायुयान
बस, सीधा ही होता है प्रयाण
हां, आगे क्या होगा?
यह तो बस खयाल है
कोई प्रोमीसरी नोट या
रुपयों की अंटी नहीं है
तुम्हें स्वर्ग मिलेगा या नर्क
इस बात की
कोई गारंटी नहीं है
सुना है आजकल
यमराज ने कुछ
ज्यादा ही भैंसे लगा दिये हैं
यमदूत भी बढा दिये हैं
वे चारों दिशाओं में डोलते हैं
और ज्योंही कोई मरता है
प्राणों को बांधकर
सीधा नरक में ही
ले जाकर खोलते हैं
पर, तुम्हें इससे क्या?
मेरे यार! स्वर्ग में तो
धूम्रपान, मदिरापान
पर पाबन्दी है और
नर्क में है इसका
खुला प्रचार
तुम तो धूम्रपान करते जाओ
जीते-जी मरते जाओ
जिस दिन भी तू
हमेशा के लिए सो जाएगा
तो बाकी काम तो
अपने-आप हो जायेगा

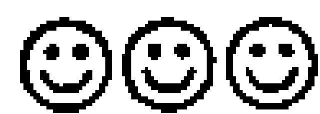
मजा कर मेरे यार!
खुशी से जी अरे!
बैंक बैलेंस में
क्या रखा है?
ले यह सिगरेट
और जमकर पी
झूमकर जाम चढ़ा
अपने को
और थोड़ा आगे बढ़ा।



अकाल राहत कार्य

अकाल राहत कार्य.
शुरू किया गया
तो गांव के गरीब लोगों को
काम पे लिया गया
तालाब खुदवाने के वास्ते
स्याणे लोगों ने
ढूंढ लिये इसमें भी
कमाई के रास्ते
अकालग्रस्त गांव
जिसमें कुल तीस घर
हर घर में औसतन
चार लोग हों अगर
तो केवल
एक सौ बीस होते हैं
जो दिन-भर गड्ढे खोदते हैं
मिट्टी ढोते हैं

मगर अफसर रजिस्टर में
लगाते हैं दो सौ अंगूठे
यानी कि
शेष अस्सी मजदूर
फर्जी और झूठे
जिन्हें अफसर
हाजिर दिखाता है
ऊपर वाले अफसर से
चिड़िया बिठवाता है
इस बजट का
बराबर का हिस्सा
दोनों के घर जाता है
हर एक यहां पर खा रहा
हराम की कमाई है
क्योंकि
चोर-चोर मौसेरे भाई हैं।

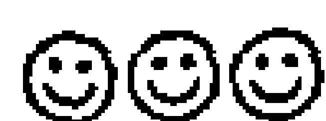




मोबाइल

आपको मेरे विचार
जंचें या न जंचें, पर
अपना तो यही कहना है
इस मोबाइल
नामक बीमारी से बचें
सुबह-शाम, दिन-रात
करते रहते हो बात
बेकार की चर्चा
बढ़ा लिया है
फिजूल का जबरदस्त खर्चा
मोबाइल फोन
पतले-मोटे
हथेली में छिप जायं
इतने छोटे
जानदार, शानदार, रंगीन
पर कभी-कभी
मामला कर देते हैं संगीन
तरह-तरह की रिंगटोन
वाह रे! मोबाइल फोन!
यह फोन बन गया है
जिंदगी का एक

जरूरी हिस्सा
कुछ दिनों पूर्व
मुझे श्मशान जाना पड़ा
वहीं का है सच्चा किस्सा
पुत्र ने पिता की चिता को
मुखाग्नि दी, लोग खड़े थे मौन
तभी पुत्र की जेब में
पड़े मोबाइल से
सुनाई पड़ी रिंगटोन
झूम-झूम कर नाचो आज
गाओ खुशी के गीत
आज किसी की हार हुई है
और किसी की जीत
इस घटना ने
सच्चे पुत्र को
तिलमिला दिया
उसने पिता के
शव के साथ मोबाइल को भी
जला दिया.....।



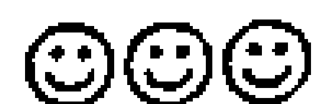
साड़ियों की बम्पर सेल

होल-सेल का माल
बिक रहा था रिटेल में
बाजार में लगी
साड़ियों की बम्पर सेल में
लिखा था
प्रेमिका को साथ में लाओ
एक के बदले में
एक फ्री ले जाओ
छूट सेंट-परसेंट
पति के साथ आओ तो
मिलेगी टेन परसेंट
छूट की मच रही थी लूट
ग्राहक पड़ रहे थे टूट
लोग आ रहे थे
प्रेमिका को साथ ला रहे थे
कुछ लोग बीवी को ही
प्रेमिका बता रहे थे
झूठ बोलके छूट का

मजा उठा रहे थे
एक भन्नाया हुआ-सा
असली पति दुकानदार से बोला
प्रेमिका के लिए
छूट सेंट-परसेंट और
पत्नी के लिए
केवल टेन परसेंट!
यह पतियों के साथ
भला कैसी नाइन्साफी है?
यह बात हमें बहुत खलती है
दुकारदार बोला, श्रीमान्!
यह दुकान
प्रेमियों से चलती है
भला! पति भी कभी
पत्नी के लिए
साड़ी लाता है?
प्रेमी पट्ठा तो
प्रेमिका को
एक के बदले
चार साड़ी दिलाता है।
☺☺☺

अदालत से डरो मत

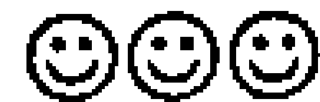
मुजरिम हो तो
अदालत से डरो मत
यार फालतू में
घुट-घुटके मरो मत
भरी अदालत में
ये काले कोट वाले
कहते हैं
गीता या कुरान की
कसम खा ले
तू जैसे भी बच सके
अपने को बचाले
धरम-वरम के चक्कर में
तू बिल्कुल
उलझे-ई मत
गीता की कसम खा के हिन्दू
कुरान की कसम खाके मुसलिम
तू अपने को
समझे-ई मत।



कमीशन/दलाली

कमीशन और
दलाली की बदौलत
जरुरत से ज्यादा कमा ली दौलत
शुरू हुआ
पार्टियों में आना-जाना
पीना-पिलाना
देर से रात को घर में आना
सुबह पत्नी ने
पूछा - तुम कल रात
बड़ी देर से आये
कौन-कौन था तुम्हारे साथ ?
पति ने झुंझलाते हुए
कहा - तुम क्यों
पूछ रही हो यह बात ?
पत्नी को देता हुआ ज्ञान
उसके कंधे पे
हाथ रखकर बोला - मेरी जान!

रात को दोस्त ने
कुछ ज्यादा पी ली थी
उसे घर छोड़ना जरूरी था
मैंने कार धीरे चलाई
इसलिए कहीं
टक्कर नहीं खाई
पत्नी बोली – खैर!
कोई बात नहीं
तुम्हारे दोस्त की
अमानत लौटा आना
ये टूटी हुई
कांच की चूड़ियां
लेडीज रुमाल
और हेयर-पिन
दुखी होरहे हैं
उसके बिन।

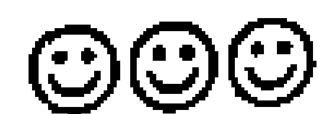


बदला - लेगी

मेरे दोस्तों में
मेरा एक दोस्त है
वो है सबसे जुदा
खुदा की मेहरबानी से
होगया शादीशुदा
वो बेचारा भोला-भाला इंसान
बड़ा दुखी और परेशान
चेहरे पे नजर आरही थीं
दुख की परछाइयां
मैंने पूछा



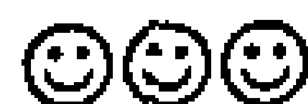
क्यों नन्हे मियां
क्या कोई लफड़ा होगया है?
वो बोला, हां यार!
तेरी भाभी से झगड़ा होगया है
उसने एक हफ्ते तक
न बोलने की कसम खाई है।
मैंने कहा
यार! फिर तो तुम्हें बधाई है
वो बोला, क्या खाक बधाई है?
मेरी तो शामत आई है
भारी होगया है
पल-पल छिन-छिन
एक घंटे बाद
पूरा हो जायेगा
उसका सातवां दिन
मेरी मस्ती
अब आगे नहीं चलेगी
वो पट्ठी मुझसे
गिन-गिनके बदला लेगी।



शादी मत करना

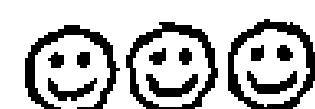
अफसर ने अफसरी
छांटते हुए
आफिस के क्लर्क
को डांटते हुए
कहा – बहुत होगया
कितनी छुट्टियां
ले चुके हो?
दो बार विदाउट
पे हो चुके हो
कभी ससुराल जाना
कभी बच्चे को
स्कूल में भर्ती कराना
कभी मां बीमार
कभी साले की सगाई
कभी साली की गोद–भराई
न जाने कैसे–कैसे
बहाने बनाते हो!

महीने में पन्द्रह दिन
ऑफिस आते हो
क्लर्क को
कोई फर्क नहीं पड़ा
बेशर्मी से
मुस्कराकर बोल पड़ा
सर! एक बार
और छुट्टी दे दीजिये
आप तो दयालु हैं
कृपा कीजिये
आगे से
छुट्टी पर नहीं जाऊंगा
दरअसल सरकारी
नौकरी वालों की
शादी जल्दी हो जाती है
यहां आपका हुक्म चलता है
वो घर पे चलाती है
यहां आपके अंडर में रहता हूं
वहां उसके अंडर में रहता हूं
इसीलिए तो
मैं कुंवारों से कहता हूं
अपने हाथों
अपनी जिन्दगी
तबाह मत करना
कोई कितना भी
लालच क्यों न दे मगर
भूलकर भी य़ार
तुम शादी मत करना।



जान क्या धीरे-से निकलती है

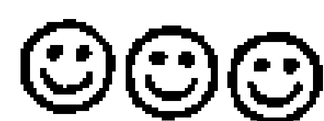
बच्चे ने मां से पूछा
मां! तू मुझे एक बात बता
जब किसी की
जान निकलती है
तो क्या वह
धीरे-धीरे चलती है?
यकायक ऐसा प्रश्न सुन
मां घबरा गई, लगी सोचने
यह बात बच्चे के मन में कैसे आगई?
बहुत डर गई
विस्मय से भर गई
तुरन्त बच्चे को
पुचकारते हुए
उसके सिर पर हाथ रखकर
दुलारते हुए बोली, बेटा!
ऐसा तुझे किसने समझाया?
तब बच्चे ने मां को बताया
कल आप घर पर
नहीं थीं, बाजार गई थीं
लेने के लिए सामान तब
पापा पड़ोस की आंटी से बोले
जरा धीरे-से
निकला करो मेरी जान!



वृद्धजन

कैसा कलियुगी काल है
वृद्धों का यहां बुरा हाल है
घर में ये उपेक्षित बुजुर्ग
कभी रहे थे मजबूत दुर्ग
समय से पहले खंडहर होगये
एक पुराने कैलेंडर होगये
सींचते-सींचते पारिवारिक क्यारी
देके खून-पसीना
आज खुद के बनाये उपवन में
होगया मुश्किल जीना
अब इनकी औलाद
नहीं रखती है याद
माता-पिता का त्याग
उनकी तपस्या
एक बहुत बड़ी समस्या
अब तो ये बूढ़े
समझे जाते हैं घर के कूड़े
नये जमाने की नयी पीढ़ी
समझती है बूढ़ों को

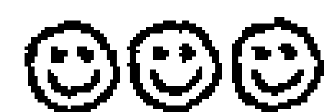
एक बेकार सीढ़ी
जिन बच्चों ने सीखा था
उंगली पकड़के चलना
आज उनको ही आगया है
हर बात पे आंखें बदलना
बच्चा पढ़े, आगे बढ़े
इसलिए दिलायी थी
अच्छी से अच्छी शिक्षा
आज अपनी जरूरतों के लिए
अपनी ही औलाद से
मांगनी पड़ती है भिक्षा
अब आप ही बतायें
ये जायें तो कहां जायें?
इतनी उपेक्षा,
इतनी बेइज्जती
इतना तिरस्कार!
नयी पीढ़ी ने
पुरानी पीढ़ी को
कैसा दिया है उपहार!



तकरार

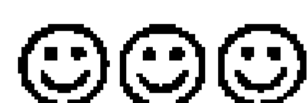
पति-पत्नी के बीच
रोज होती थी तकरार
लेकिन झगड़ा इस बार
इतना बढा, पत्नी को
दुखी होकर कहना पड़ा
अब तुम्हारे साथ रहना
बहुत मुश्किल है
पति बोला
तू तो यहीं रह
मैं ही चला जाता हूं
रोज-रोज का
झंझट मिटाता हूं
इतना सुनते ही
पत्नी घर के बाहर चलदी
पति ने भी
उठाकर ताला
दरवाजे पे डाला
और होगया गुम
मगर दोनों को चैन कहां?
इधर पत्नी परेशान
उधर पति गुमसुम
दोनों अधीर

इक-दूजे बिन
कुछ दिन बाद
घर की
सताने लगी याद
पति जैसे ही
लौटकर घर आया
सामने बैठी पत्नी को पाया
पति ने पूछा
कहां रही इतने दिन-रात ?
वो तपाक से बोली
'आनन्द' के साथ।
पत्नी ने पूछा
तुम्हारी कैसे कटी ?
पति बोला
खूब मस्ती में रहा शांति के साथ
यह सुन
दोनों आशंकित थे
और दिल डर रहा था
दोनों के बीच था मौन
अब इनको
समझाये कौन ?
शांति और आनन्द
सिर्फ अनुभूति है
न कि नाम हैं
पति-पत्नी के बीच
भ्रान्ति से उपजी
अशांति का दुष्परिणाम है।



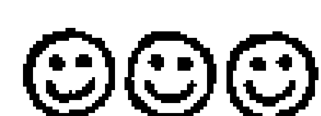
जादुई मशीन

ठेठ गांव का
रहने वाला एक अधेड़
पहली बार
बड़े शहर में आया
वहां ऊंची-ऊंची बिल्डिंगें
देखकर चकराया
हिम्मत करके
एक बिल्डिंग में घुसा
तो सामने
लिफ्ट नजर आई सहसा
बुढ़िया गई अन्दर
थोड़ी ही देर में
एक महिला निकली
जवान और सुन्दर
ग्रामीण ने सोचा
कितनी बढ़िया है
यह जादू की मशीन
कितना मजा आता?
काश! मैं भी अपने साथ
लुगाई को ले आता, खैर!
अगले महीने फिर आऊंगा
और मशीन में डालकर
उसे भी जवान बनाऊंगा।



नई-नवेली

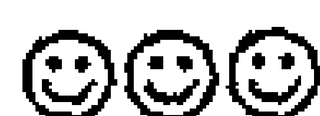
नई-नवेली दुल्हन को
अच्छा खाना बनाने का था
जरूरत से ज्यादा भरोसा
उसने प्रथम बार बनाया खाना
और पति को परोसा
उसने जैसे ही पहला कौर खाया
खाने ने असर दिखाया
जल गया मुंह निकल गये आंसू
पत्नी ने पूछा
खाना कैसा लगा?
पति बोला, बहुत बढ़िया
एकदम धांसू
पत्नी ने पूछा
जब आप खाना
बढ़िया कह रहे हैं
तो फिर
ये आंसू क्यों बह रहे हैं?
पति बोला, अपने मन की
कह नहीं पा रहा हूं
आंसू इसलिए हैं कि
सह नहीं पा रहा हूं
तब पत्नी ने सोचा, चलो!
सच्चाई परख लेती हूं
कैसा बना है
खाना मैं ही चख लेती हूं
पहला ग्रास
खाते ही उत्तर मिल गया था
सब्जी में इतनी मिर्च
डालदी थी कि
पूरा मुंह जल गया था।



देश की ऐसी-तैसी हमने अपने हाथों करदी

देश की ऐसी-तैसी
भारतमाता लगने लगी
किसी भिखारिन जैसी
अपने देशवासियों का तिरस्कार
विदेशी नस्ल के कुत्तों से प्यार
होटलों में कैबरे-डिस्को डांस
बिजनिस बना लिया रोमांस
कितनी दयनीय दशा
होगई चरित्र की
अच्छी नहीं लगती खुशबू
चन्दन गुलाब के इत्र की
भाने लगा है मन को
नकली फॉरेन का सेंट
शर्ट, टाई, घड़ी, चश्मा
और पेंट
हिन्दी को छोड़
बोले है इंगलिश
जो है भाषा विदेशी
हमने
चाऊमिन, कॉर्न फ्लैक्स
नूडल्स और पिज्जा
खा-खाकर
दिमाग कर लिया है ठस
नहीं भाता आलू का परांठा

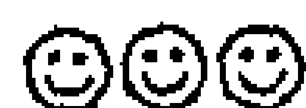
सरसों का साग
बाजरे की रोटी
लस्सी या गन्ने का रस
ये अपने रुपये के दुश्मन
डॉलर हितैषी – हमने –
कितने परिवर्तन हैं व्यवहार से
अरुचि होने लगी है
व्रत, मेले, त्योहार से
कितनी गिरावट
आगई आचरण में
वैलेंटाइन डे की तारीख
सिर्फ रही है स्मरण में
कानफोड़ू पॉप म्यूजिक
शोर करने लगा है
शास्त्रीय संगीत
अब बोर करने लगा है
पीने को चाहिये
व्हिसलरी और कोकाकोला
सीता, सावित्री और राधा
होगई हैं रिंकी, पिंकी
और रमोला
नंगापन और फूहड़पन की
लगी नुमाइश कैसी–कैसी
हमने अपने हाथों करदी
देश की ऐसी–तैसी।



चोरी में सबका हिस्सा है

नेताजी के घर में होगई चोरी
चोर ने दो लाख उड़ा लिए
तोड़कर तिजोरी
नेताजी ने थाने में फोन करके
धमकाया, थानेदार!
गर चोर पकड़ में नहीं आया
तो तुम्हारा ट्रांसफर करवा दूंगा
और तुम्हारी वर्दी उतरवा दूंगा
चोरी किसने की? यह बात तो
पुलिस को पता चल गई
मगर नेताजी की वर्दी
उतरवाने वाली (बात) धमकी
थानेदार को खल गई
इसलिए चोर से खाकर रिश्वत
अच्छी-खासी दी शाबासी
और चोर को छोड़ दिया
दुबारा जैसे ही नेताजी का
थाने में आया फोन
थानेदार अकड़ गया, बोला
समझ में नहीं आता कि
चोर कौन है? चोर वह
जिसने तोड़ी तिजोरी

या फिर आप?
चोरों के भी बाप
बिना डरे-घबराये
करोड़ों डकार लेते हो
रोज लाखों रुपये
रिश्वत में मार लेते हो
किसको पकड़ें साहब?
समझ में नहीं आता है
मुझे बहुत हंसी आती है
जब एक चोर दूसरे को
चोर बताता है
मची हुई है अंधेरगर्दी
रही हमारी वर्दी
जो हम पहने हैं
उतरने के बाद भी
हम पुलिस में ही रहने हैं
जहां भी तबादला होगा हम जायेंगे
आपकी तरह जनता द्वारा
चोर तो नहीं कहलाएंगे
लोग यह बात दे-दे के जोर कहते हैं
हरेक नेता को यहां सभी
चोर कहते हैं
आप चाहे कितना भी हमें धमकाएं
और हमसे अकड़ें
अब आप ही बताएं
हम किस चोर को पकड़ें?
हमें अच्छी तरह से याद है
एक भी फोन नहीं
आया थाने में उसके बाद
अजीब तरह का किस्सा है
इस चोरी की कमाई में
सबका अपना-अपना हिस्सा है।





पंकज गोस्वामी

जन्म बीकानेर में 5 अगस्त, 1948 को। एम.एस.सी. प्राणीशास्त्र में। पिता स्व. भगवान-दत्त गोस्वामी राजस्थानी व हिन्दी साहित्य के लेखक, मातृश्री सात्विक गृहिणी परिवार के लिए समर्पित। तीन भाइयों में मझला।

साहित्य और कला में रुचि के प्रेरणा-स्रोत पिताश्री थे। कुछ बनाने और लिखने की प्रेरणा उन्हें सृजन करते देखकर होती थी। उनकी प्रकाशित रचना के साथ जो साहित्य घर डाक से आता, उसे पढ़ता। तभी से आरम्भ हुई यात्रा।

आरंभ के दिनों, चित्र बनाने के अतिरिक्त, रंग भरो प्रतियोगिताओं में भाग लिया। 'पराग', 'नंदन', जैसी पत्रिकाओं में प्रथम पुरस्कार प्राप्त किये। स्थानीय स्तर पर भी अनेक पुरस्कार मिले। शंकर बाल चित्रकला प्रतियोगिताओं में भी निरंतर भाग लेता रहा।

1966 में कार्टून प्रकाशन मे पदार्पण किया। पहला कार्टून 'जाह्नवी' पत्रिका में छपा। नियमित छपते रहे, 'शंकर्स वीकली' के हिन्दी संस्करण में नियमित रूप से कार्टून्स प्रकाशित होते रहे। 'टाइम्स ऑफ इंडिया' समूह की पत्रिका, विशेषकर 'पराग' में कार्टूनों, शिशुगीतों, कविताओं व कहानियों का निरंतर प्रकाशन। उन दिनों देश में हास्य-व्यंग्य की एक पत्रिका 'दीवाना तेज' प्रकाशित हुई उसमें मुख्य कार्टूनकारों में एक रहा, निरंतर कई वर्षों प्रकाशन होता रहा। कामिक्स में भी काम किया। डायमंड कामिक्स में व्यंग्यचित्र कथाएं प्रकाशित।

समाचार पत्रों में कालम के रूप में जोधपुर के दैनिक 'प्रतिनिधि' में 'आसपास' पॉकेट कार्टून प्रथम अंक से प्रकाशित। बयालीस वर्षों की साहित्य सृजन, कार्टून रचनाकारिता अब तक जारी। इस दौरान देश के सभी प्रतिष्ठित समूह 'दिल्ली प्रेस समूह', 'टाइम्स ऑफ इंडिया', 'हिन्दुस्तान टाइम्स', 'शंकर्स वीकली', 'ट्रिब्यून समूह', 'पंजाब केसरी समूह' के अतिरिक्त देश के अधिकतर राज्यों के हिन्दी व भाषाई समाचार पत्रों में नियमित प्रकाशन। राजस्थान के समाचार पत्र 'राष्ट्रदूत', 'नवज्योति', 'दैनिक भास्कर' 'सांध्य सवेरा' में नियमित प्रकाशित। संप्रति-'सांध्य सवेरा' प्रतिनिधि दैनिक में नियमित पाकेट कार्टून्स प्रकाशित हो रहे हैं।

पिछले सत्रह वर्षों से 'ननमुन' कार्टून पेज 'सरिता' पाक्षिक में प्रकाशित हो रहा है।

अनेक स्थानीय व राज्य स्तरीय सम्मान व पुरस्कार प्राप्त। अनेक कार्टून [illegible] [illegible] आयोजित किए हैं। क्रमशः यात्रा जारी है.....